कामन्दकीय नीतिसार – सप्तमः सर्गः – राजपुत्ररक्षणप्रकरणम् एवं आत्मरक्षणप्रकरणम्)
(Kamandakīya Nītisāra – Sarga 7: Rājaputrarakṣaṇaprakaraṇam & Ātmarakṣaṇaprakaraṇam)



मूल ग्रंथकार (*Original Author*) : आचार्य कामन्दक (Ā*cārya Kāmandaka*)

व्याख्या एवं प्रस्तुति (Commentary & Presentation) : *Indian Philosophy & Ethics*

लेखक / संपादक (*Author / Editor*) : *Anand Singh Dhami*

विषय क्षेत्र (*Subject Area*) : *भारतीय दर्शन, नीतिशास्त्र, राजधर्म, राज्यशास्त्र, नेतृत्व अध्ययन, सुशासन, सुरक्षा-व्यवस्था, संस्कृत साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा, सार्वजनिक प्रशासन, फोरेंसिक विज्ञान (विष-परीक्षण), VIP सुरक्षा-प्रोटोकॉल।*

संक्षिप्त परिचय : *कामन्दकीय नीतिसार के **सप्तमः सर्ग** में दो प्रमुख प्रकरण हैं – **राजपुत्ररक्षणप्रकरणम्** (श्लोक १-८) तथा **आत्मरक्षणप्रकरणम्** (श्लोक ९-५९)। प्रथम प्रकरण राजा के पुत्रों (उत्तराधिकारियों) के **अनुशासन, संस्कार एवं नियन्त्रण** पर केंद्रित है, जबकि द्वितीय प्रकरण राजा की **व्यक्तिगत सुरक्षा** – विष-परीक्षा, भोजन-पेय-वस्त्र-आभूषण-निरीक्षण, अन्तःपुर-सुरक्षा, यान-मार्ग-सुरक्षा, जन-भीड़-त्याग, स्त्री-संग-विवेक एवं निद्रा-प्रोटोकॉल – का अत्यन्त वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक विवेचन प्रस्तुत करता है। यह सर्ग राजा को **आत्मरक्षा ही प्रजा-रक्षा का आधार** है, इस दार्शनिक-सिद्धान्त पर आधारित है तथा विष-परीक्षण-विधियों, पक्षियों द्वारा सूचन-तन्त्र, रासायनिक-लक्षण-ज्ञान आदि के माध्यम से आधुनिक फोरेंसिक विज्ञान के समकक्ष ज्ञान प्रदान करता है।*

ऑनलाइन लेख: *https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/07/kamandakiya-nitisara-sarga-7-royal-security.html*

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय राजनीति-शास्त्र में **राजा की आत्मरक्षा** को राज्य-सुरक्षा का प्रथम एवं सर्वोपरि अंग माना गया है। कामन्दक का यह सर्ग इसी मान्यता पर आधारित है – *"राजा हि रक्षिता"* (राजा स्वयं रक्षक है) – अतः वह स्वयं रक्षित हो, यह प्रजा-रक्षा की पूर्व-शर्त है।

इस सर्ग की विशेषता यह है कि यह **अत्यन्त व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक** है। विष-परीक्षा-विधान में पक्षियों (तोता, मैना, चकोर, कोयल) द्वारा विष-सूचन, अग्नि-परीक्षा (नीली ज्वाला, शब्द-स्फोट), द्रव-पदार्थों की छाया-रेखा-फेन-रंग-परीक्षा – ये सभी आधुनिक **फोरेंसिक-टॉक्सिकोलॉजी** के समकक्ष हैं। ऐतिहासिक-उदाहरणों (श्लोक ५१-५४) के माध्यम से कामन्दक यह सिद्ध करते हैं कि **रक्त-सम्बन्धी, रानियाँ, आभूषण, वस्त्र, छत्र एवं वेणी** – ये सब घातक-साधन बन सकते हैं। अन्तःपुर-सुरक्षा (श्लोक ४१-५०) – बख्तर-धारी रक्षकों से घिरना, प्रवेश-निर्गम-नियंत्रण, तथा स्त्रियों पर अति-विश्वास-त्याग – यह आधुनिक **VIP सुरक्षा-प्रोटोकॉल** का प्राचीनतम स्वरूप है।

अन्तिम निष्कर्ष (श्लोक ५८) – *"नयेन जाग्रत्यनिशं नरेश्वरे सुखं स्वपन्तीह निराधयः प्रजाः"* – जब राजा सतर्क रहता है, तो प्रजा निर्भय होकर सोती है। **राजा की जागृति ही प्रजा की निद्रा है** – यही इस सर्ग का केन्द्रीय दार्शनिक-सन्देश है। यह सर्ग आधुनिक 'राष्ट्रीय-सुरक्षा-सिद्धान्त' (National Security Doctrine) का प्राचीनतम एवं पूर्णतम स्रोत है।

श्लोक १ (अनुशासन-रहित पुत्रों का खतरा)

श्लोक

प्रजात्मश्रेयसे राजा कुर्वीतात्मजरक्षणम् ।
लोलुभ्यमानास्तेऽर्थेषु हन्युरेनमरक्षिताः ॥१॥

IAST

Prajātmaśreyase rājā kurvītātmajarakṣaṇam |
Lolubhyamānāste'rtheṣu hanyurenamarakṣitāḥ ||1||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
प्रजात्मश्रेयसे	प्रजा एवं अपने कल्याण के लिए
राजा	राजा
कुर्वीत	करे
आत्मजरक्षणम्	पुत्रों की रक्षा (अनुशासन/संस्कार)
लोलुभ्यमानाः	लोलुप/अत्यधिक लालची होते हुए

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अर्थेषु	धन/राज्य-सम्पत्ति के लिए
हन्युः	मार डालें
अरक्षिताः	बिना रक्षा/अनुशासन के

भावार्थ
राजा को प्रजा और अपने कल्याण के लिए अपने पुत्रों की रक्षा (अनुशासन एवं संयम) करनी चाहिए। यदि वे अरक्षित (बिना संयम/अनुशासन) रहेंगे, तो वे राज्य-सम्पत्ति के लालच में स्वयं राजा (पिता) को भी मार डालेंगे। अनुशासन-रहित पुत्र स्वयं घातक होते हैं।

दार्शनिक विवेचन

यह 'संस्कार-रक्षा' (Protection through discipline) का सिद्धान्त है। 'अरक्षित' का अर्थ केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं, बल्कि नैतिक-अनुशासन है। कामन्दक राजा को 'आत्मजरक्षणम्' (पुत्र-संस्कार) को प्रजा-हित से जोड़ते हैं – यह 'राजर्षि' परम्परा का व्यावहारिक रूप है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक परिवारों में यह 'पेरेंटिंग' (Parenting) पर लागू होता है – बिना संस्कार/अनुशासन के बच्चे परिवार-सम्पत्ति को नष्ट कर सकते हैं। संगठनों में उत्तराधिकारी-योजना (Succession Planning) में अनुशासन-पूर्वक प्रशिक्षण आवश्यक है।

श्लोक २ (उन्मत्त राजकुमार – हाथी-उपमा)

श्लोक

राजपुत्रा मदोन्मत्ता गजा इव निरङ्कुशाः ।
भ्रातरं वापि निघ्नन्ति पितरं वाभिमानिनः ॥२॥

IAST

Rājaputrā madonmattā gajā iva niraṅkuśāḥ |
Bhrātaraṃ vāpi nighnanti pitaraṃ vābhimāninaḥ ||2||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
राजपुत्राः	राजकुमार

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
मदोन्मत्ताः	मद/अहंकार से उन्मत्त
गजाः	हाथी
निरङ्कुशाः	बिना अंकुश के
भ्रातरम्	भाई को
निघ्नन्ति	मार डालते हैं
पितरम्	पिता को
अभिमानिनः	अहंकारी

भावार्थ

अनुशासन-रहित राजकुमार उन्मत्त हाथियों के समान होते हैं – वे अहंकार में अपने भाई या पिता को भी मार डालते हैं। बिना अंकुश (संयम) के वे परिवार-घातक बन जाते हैं।

दार्शनिक विवेचन

'निरङ्कुशः गजः' – अंकुश-रहित हाथी अपने महावत को भी मारता है। यह 'अहंकार' (अस्मिता) एवं 'राग' (मोह) का परिणाम है – योग-दर्शन के क्लेश (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश) का व्यवहारिक रूप।

आधुनिक संदर्भ

आज के 'प्रिविलेज्ड' बच्चे/उत्तराधिकारी बिना संयम के परिवार-संगठन को नष्ट कर देते हैं। 'एगो लीडरशिप' (अहंकारी नेतृत्व) एवं 'टॉक्सिक परिवार' में यह समस्या स्पष्ट दिखती है – यही 'फैमिली बिजनेस कॉन्फ्लिक्ट' का प्राचीन सूत्र है।

श्लोक ३ (राज्य-रक्षा की कठिनाई)

श्लोक

राजपुत्रैर्मदोन्मत्तैः प्रार्थ्यमानमितस्ततः ।
दुःखेन रक्ष्यते राज्यं व्याघ्राघ्रातमिवामिषम् ॥३॥

IAST

Rājaputrairmadonmattaiḥ prārthyamānamitastataḥ |
Duḥkhena rakṣyate rājyaṃ vyāghrāghrātamivāmiṣam ||3||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
राजपुत्रैः	राजकुमारों द्वारा
मदोन्मत्तैः	उन्मत्त/अहंकारी
प्रार्थ्यमानम्	(राज्य) प्रार्थित/चाहा जाता हुआ
इतस्ततः	इधर-उधर से
दुःखेन	कष्ट से
रक्ष्यते	रक्षा की जाती है
राज्यम्	राज्य
व्याघ्राघ्रातम्	बाघ द्वारा सूँघा हुआ
आमिषम्	मांस/भोजन

भावार्थ

जब राजकुमार स्वयं उन्मत्त होकर राज्य को चाहने लगते हैं, तो राज्य की रक्षा करना अत्यन्त कष्टदायक हो जाता है – ठीक उसी प्रकार, जैसे बाघ द्वारा सूँघे गए मांस की रक्षा करना कठिन होता है।

दार्शनिक विवेचन

'व्याघ्राघ्रातमामिषम्' – एक बार बाघ का स्पर्श हो जाने पर उस मांस को बचाना असंभव है। इसी प्रकार, एक बार राजकुमारों में राज्य-लालसा उत्पन्न होने पर, राज्य-प्रशासन अत्यन्त कठिन हो जाता है। यह 'आन्तरिक-शत्रु' की समस्या है।

आधुनिक संदर्भ

आज के 'परिवार-स्वामित्व वाले व्यवसाय' (Family-owned businesses) में जब कई उत्तराधिकारी कम्पनी पर कब्ज़ा चाहते हैं, तो संगठन का शासन अत्यन्त दुःखद एवं कठिन हो जाता है – 'सक्सेशन वॉर' का प्राचीन रूप।

श्लोक ४ (सिंह-शावक-उपमा)

श्लोक

रक्ष्यमाणा यदि च्छिद्रं कथंचित्प्राप्नुवन्ति ते ।
सिंहशावा इव घ्नन्ति रक्षितारमसंशयम् ॥४॥

IAST

Rakṣyamāṇā yadi chidraṃ kathaṃcit prāpnuvanti te |
Siṃhaśāvā iva ghnanti rakṣitāramasaṃśayam ||4||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
रक्ष्यमाणाः	रक्षित किए जाते हुए
यदि	यदि
च्छिद्रम्	अवसर/कमजोरी
कथंचित्	किसी प्रकार
प्राप्नुवन्ति	प्राप्त कर लेते हैं
सिंहशावाः	सिंह-शावक
इव	समान
घ्नन्ति	मार डालते हैं
रक्षितारम्	रक्षा करने वाले को
असंशयम्	निस्संदेह

भावार्थ

अनुशासन द्वारा रक्षित किए जा रहे राजकुमार, यदि किसी भी प्रकार कोई छिद्र/अवसर पा लें, तो वे सिंह-शावकों की भाँति अपने रक्षक (पिता/गुरु) को ही मार डालते हैं – इसमें कोई संदेह नहीं। बंधन में भी उनका स्वभाव विकट होता है।

दार्शनिक विवेचन

'सिंहशावाः' – सिंह के बच्चे स्वभाव से हिंसक होते हैं; केवल बन्द करने से वे पालतू नहीं होते। यहाँ 'रक्षण' का अर्थ केवल बाह्य-बन्धन नहीं, बल्कि 'आन्तरिक-संस्कार' है – जिसके अभाव में बाह्य-रक्षा असफल हो जाती है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक परिवारों/संगठनों में 'अत्यधिक नियंत्रण' (Over-protection) भी असफल होता है – जैसे ही अवसर मिलता है, विद्रोही उत्तराधिकारी अपने ही रक्षक/मार्गदर्शक को नुकसान पहुँचाते हैं। यही 'बूमेरांग इफेक्ट' है।

श्लोक ५ (विनय/अनुशासन की अनिवार्यता)

श्लोक

विनयोपग्रहान् भूत्यै कुर्वीत नृपतिः सुतान् ।
अविनीतकुमारं हि कुलमाशु विनश्यति ॥५॥

IAST

Vinayopagrahān bhūtyai kurvīta nṛpatiḥ sutān |
Avinītakumāraṃ hi kulamāśu vinaśyati ||5||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विनय	विनम्रता/अनुशासन
उपग्रहान्	स्वीकार/ग्रहण
भूत्यै	कल्याण/समृद्धि के लिए
कुर्वीत	करे
नृपतिः	राजा
सुतान्	पुत्रों को
अविनीतकुमारम्	बिना अनुशासन कुमार
कुलम्	वंश/परिवार
आशु	शीघ्र
विनश्यति	नष्ट हो जाता है

भावार्थ
राजा को अपने पुत्रों पर अनुशासन (विनय) का संस्कार इसलिए करना चाहिए, जिससे कुल/वंश की समृद्धि हो। बिना अनुशासन का राजकुमार पूरे कुल को शीघ्र नष्ट कर देता है। अनुशासन-हीनता परिवार-विनाश का मूल कारण है।

दार्शनिक विवेचन

'विनय' यहाँ 'विद्या + नम्रता + संयम' का सम्मिलित रूप है। 'उपग्रह' – अर्थात् 'ग्रहण करना'। 'भूत्यै' – अर्थशास्त्र के 'त्रिवर्ग' (धर्म-अर्थ-काम) में 'अर्थ' की वृद्धि हेतु। यह 'कुल-रक्षा-धर्म' है – जैसे सूर्य-वंश में अनुशासन-परम्परा अनिवार्य थी।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फैमिली गवर्नेंस' – अनुशासन-पूर्वक उत्तराधिकार-योजना ही परिवार-संगठन की दीर्घकालिक समृद्धि सुनिश्चित करती है। बिना अनुशासन का वारिस शताब्दियों का 'ब्रांड/कुल' नष्ट कर देता है।

श्लोक ६ (योग्य-नियोग एवं अयोग्य-बन्धन)

श्लोक

विनीतमौरसं पुत्रं यौवराज्येऽभिषेचयेत् ।
दुष्टं गजमिवोद्वृत्तं कुर्वीत सुखबन्धनम् ॥६॥

IAST

Vinītamaurasaṃ putraṃ yauvarājye'bhiṣecayet |
Duṣṭaṃ gajamivodvṛttaṃ kurvīta sukhabandhanam ||6||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विनीतम्	अनुशासित/संस्कारी
औरसम्	अपना पुत्र
पुत्रम्	पुत्र को
यौवराज्ये	युवराज-पद पर
अभिषेचयेत्	नियुक्त करे
दुष्टम्	दुष्ट/उद्दण्ड
गजम्	हाथी
उद्वृत्तम्	उन्मत्त

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
कुर्वीत	करे
सुखबन्धनम्	सुख-बन्धन (संयम)

भावार्थ
अनुशासित (विनीत) पुत्र को ही राजा युवराज (उत्तराधिकारी) बनाए। यदि पुत्र दुष्ट/उद्‌वृत्त है, तो उसे उसी प्रकार सुख-बन्धन (अंकुश/नियंत्रण) में रखना चाहिए, जैसे उन्मत्त हाथी को जंजीर/बेड़ी से बाँध दिया जाता है। योग्य-नियोग एवं अयोग्य-नियंत्रण – दोनों नीतियाँ आवश्यक हैं।

दार्शनिक विवेचन

'सुखबन्धनम्' – यहाँ 'सुख' शब्द विशेष है – बन्धन को 'सुखद' बनाना, अर्थात् उसे इतना संयमित करना कि वह स्वयं को बंधन में सुखी माने – यह 'युक्ति-निपुणता' है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'टैलेंट मैनेजमेंट' – उच्च-प्रतिभाशाली एवं अनुशासित उम्मीदवारों को ही शीर्ष-पद दें; अयोग्य/दुष्ट उत्तराधिकारियों को 'रोल-लिमिट' एवं 'चेक-एण्ड-बैलेंस' में रखें – यही 'गवर्नेंस' का मूल है।

श्लोक ७ (दुष्ट पुत्र-त्याग-निषेध)

श्लोक

राजपुत्रः परित्यागं सुदुर्वृत्तोऽपि नार्हति ।
क्लिश्यमानः स पितरं परमाश्रित्य हन्ति हि ॥७॥

IAST

Rājaputraḥ parityāgaṃ sudurvṛtto'pi nārhati |
Kliśyamānaḥ sa pitaraṃ paramāśritya hanti hi ||7||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
राजपुत्रः	राजकुमार
परित्यागम्	त्याग/निष्कासन
सुदुर्वृत्तः	अत्यन्त दुराचारी

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
न अर्हति	योग्य नहीं है
क्लिश्यमानः	क्लेश/कष्ट पाता हुआ
पितरम्	पिता को
परम्	शत्रु का
आश्रित्य	आश्रय लेकर
हन्ति	मार डालता है

भावार्थ

राजकुमार अत्यन्त दुराचारी होने पर भी उसे पूर्णतः त्यागना उचित नहीं – क्योंकि यदि उसे क्लेश दिया जाएगा, तो वह शत्रु-आश्रय लेकर अपने पिता को ही मार डालेगा। अतः अत्यन्त दुष्ट पुत्र को भी 'सुखबन्धन' (नियंत्रण) में रखें, परन्तु त्याग/अपमान न करें।

दार्शनिक विवेचन

'परित्यागं नार्हति' – यह 'रक्षा-नीति' का 'सर्व-सहनशील-सिद्धान्त' है – पूर्ण त्याग पुत्र को शत्रु बना देता है, जो अधिक घातक है। यह 'राज-धर्म' का 'आपत्कालीन-सहिष्णुता' है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक परिवार/संगठनों में 'पूर्ण बहिष्कार' विद्रोही उत्तराधिकारी को प्रतिद्वन्द्वी (शत्रु-आश्रित) बना देता है, जो 'व्हिसलब्लोअर' बनकर परिवार/कम्पनी का नुकसान करता है। अतः 'सीमित-दण्ड' ही बुद्धिमानी है।

श्लोक ८ (व्यसन-नियंत्रण-सुधार)

श्लोक

व्यसने सज्जमानं हि क्लेशयेद् व्यसनाश्रयैः ।
तथा च क्लेशयेदेनं यथा स्यात् पितृगोचरः ॥८॥

IAST

Vyasane sajjamānaṃ hi kleśayed vyasanāśrayaiḥ |
Tathā ca kleśayadenaṃ yathā syāt pitṛgocaraḥ ||8||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
व्यसने	दुर्व्यसन में
सज्जमानम्	लिप्त होते हुए
क्लेशयेत्	कष्ट/नियंत्रण करे
व्यसनाश्रयैः	व्यसन-निवारक साधनों से
तथा	उस प्रकार
क्लेशयेत्	कष्ट/नियंत्रण करे
एनम्	इस (पुत्र) को
यथा	जिस प्रकार
स्यात्	हो
पितृगोचरः	पिता के अधीन/नियंत्रण में

भावार्थ
यदि राजकुमार दुर्व्यसनों में लिप्त हो, तो राजा को व्यसन-निवारक साधनों द्वारा उसे नियंत्रण-कष्ट देना चाहिए – और उसे इस प्रकार नियंत्रित करे कि वह सदा पिता के अधीन बना रहे। अर्थात् संयम-पूर्ण दण्ड/नियंत्रण द्वारा उसे पिता-मार्ग पर लौटाएँ।

दार्शनिक विवेचन

'व्यसनाश्रयैः' – यहाँ 'आश्रय' का अर्थ 'सहायक-साधन' है – जैसे मित्र-मण्डल, वैद्य, गुरुजन, तथा 'व्यसन-मुक्ति-उपाय'। 'क्लेशयेत्' – यह 'सजा' नहीं, 'सुधारात्मक-दण्ड' है – जिसका उद्देश्य 'पितृगोचर' (अनुशासन-मार्ग) पर लाना है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'डी-एडिक्शन' कार्यक्रम – मद्यपान/मोबाइल-व्यसन में फँसे बच्चों/उत्तराधिकारियों को पुनर्वास-केन्द्र द्वारा सुधारना, एवं उन्हें परिवार-अनुशासन में वापस लाना – यही आधुनिक 'रेहैबिलिटेशन-एप्रोच' है।

श्लोक ९ (सर्वत्र सावधानी)

श्लोक

याने शय्यासने भोज्ये पाने वस्त्रे विभूषणे ।
सर्वत्रैवाप्रमत्तः सन् वर्जेत विषदूषितम् ॥९॥

IAST

Yāne śayyāsane bhojye pāne vastre vibhūṣaṇe |
Sarvatraivāpramattaḥ san varjeta viṣadūṣitam ||9||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
याने	रथ/वाहन में
शय्यासने	शय्या व आसन (सोने-बैठने के स्थान)
भोज्ये	खाने योग्य पदार्थ
पाने	पेय में
वस्त्रे	वस्त्रों में
विभूषणे	आभूषणों में
सर्वत्र	सभी जगह
अप्रमत्तः	सावधान/सतर्क
वर्जेत	त्याग करे/बचे
विषदूषितम्	विष से दूषित वस्तु

भावार्थ
राजा को अपने वाहन, शय्या, आसन, भोजन, पेय, वस्त्र एवं आभूषणों में सदैव सतर्क रहना चाहिए तथा विष-दूषित वस्तुओं का सर्वथा त्याग करना चाहिए। शत्रु किसी भी साधन से विष प्रयोग कर सकते हैं; अतः राजा को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चौकन्ना रहना आवश्यक है।

दार्शनिक विवेचन

यह 'आत्म-रक्षा-तत्त्व' (Self-preservation principle) है – राजा अपनी सुरक्षा को कभी हल्का न ले। 'अप्रमत्तः' शब्द योग-दर्शन के 'प्रमाद' (असावधानी) के विपरीत है। अर्थशास्त्र में 'विष-प्रयोग' को शत्रु का प्रमुख आक्रमण माना गया है।

आधुनिक संदर्भ

आज के सुरक्षा-प्रबंधन में 'हर प्रवेश-बिन्दु' पर स्क्रीनिंग अनिवार्य है। यह श्लोक 'VIP सुरक्षा-प्रोटोकॉल' (भोजन-परीक्षण, वाहन-जाँच) का प्राचीनतम स्रोत है, जो आज भी राष्ट्राध्यक्षों के लिए लागू है।

श्लोक १० (विष-निवारक स्नान, मणि एवं विशेषज्ञ)

श्लोक

विषघ्नैरुदकैः स्नातो विषघ्नमणिभूषणः ।
परीक्षितं समश्नीयाज्जाङ्गलीविद्भिषग्वृतः ॥१०॥

IAST

Viṣaghnair udakaiḥ snāto viṣaghnamaṇibhūṣaṇaḥ|
Parīkṣitaṃ samaśnīyājjāṅgalīvidbhiṣagvṛtaḥ ||10||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विषघ्नैः	विष-नाशक (औषधियुक्त) जल से
स्नातः	स्नान किया हुआ
विषघ्नमणि	विष-नाशक मणियों से
भूषणः	आभूषित
परीक्षितम्	परीक्षित/जाँचा हुआ भोजन
समश्नीयात्	खाए
जाङ्गलीविद्	जाङ्गली-विद्या (विष-विशेषज्ञ)
भिषक्	वैद्य/चिकित्सक
वृतः	घिरा हुआ/साथ लेकर

भावार्थ
राजा विष-नाशक औषधियुक्त जल से स्नान करे, विष-नाशक मणियों से आभूषित रहे, तथा विष-चिकित्सक एवं वैद्यों के साथ रहते हुए, परीक्षित भोजन ही ग्रहण करे। रासायनिक-जड़ी-बूटी एवं रत्न-विज्ञान को आत्मरक्षा में सम्मिलित किया गया।

दार्शनिक विवेचन

यह 'रसायन-चिकित्सा' का राज-प्रयोग है – जल-शुद्धि, मणि-धारण एवं 'जाङ्गली' (सर्प-विष-विशेषज्ञ) – तीन स्तरीय सुरक्षा-कवच। यह आयुर्वेद के 'अगदतन्त्र' (Toxicology) से मेल खाता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'न्यूक्लियर/बायो-हाज़र्ड' सुरक्षा में 'डिकॉन्टैमिनेशन', 'रक्षात्मक-आभूषण' (रेडिएशन-सूचक घड़ी), एवं 'चिकित्सा-टीम' – तीनों स्तर आज भी VIP सुरक्षा-व्यवस्था के अंग हैं।

श्लोक ११ (पक्षी-संकेत – भृङ्गराज, शुक, शारिका)

श्लोक

भृङ्गराजः शुकश्चैव शारिका चेति पक्षिणः ।
क्रोशन्ति भृशमुद्विग्ना विषपन्नगदर्शनात् ॥११॥

IAST

Bhṛṅgarājaḥ śukaścaiva śārikā ceti pakṣiṇaḥ |
Krośanti bhṛśam udvignā viṣapannagadarśanāt ||11||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
भृङ्गराजः	भृङ्गराज पक्षी
शुकः	तोता
शारिका	मैना
पक्षिणः	ये पक्षी
क्रोशन्ति	चीखते/रोते हैं
भृशम्	बहुत अधिक

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
उद्विग्नाः	व्याकुल
विषपन्नग	विष-सर्प को देखकर

भावार्थ
भृङ्गराज, तोता तथा मैना – ये तीनों पक्षी विष-सर्प को देखकर अत्यन्त उद्विग्न होकर चीखने लगते हैं। राजा को इन पक्षियों को महल/रसोई में रखना चाहिए, क्योंकि ये विष-उपस्थिति के प्राकृतिक 'सेंसर' हैं।

दार्शनिक विवेचन

'प्राकृत-सूचक-विज्ञान' – पक्षियों की सूक्ष्म संवेदनशीलता विष-गन्ध/आभा को भाँप लेती है। यह 'जीव-संकेत-मीमांसा' का अद्भुत उदाहरण है – प्रकृति में छिपे संकेतों को पढ़ना।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक सुरक्षा में 'जीव-सेंसर' – जैसे कुत्ते विस्फोटक/मादक पदार्थ सूँघते हैं। यह श्लोक 'जैव-निगरानी' का प्राचीन सूत्र है, जहाँ पक्षी रासायनिक-विष के प्रति प्राकृतिक 'अलार्म सिस्टम' हैं।

श्लोक १२ (चकोर, क्रौञ्च, कोकिल – विष-प्रभाव)

श्लोक

चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् ।
सुव्यक्तं माद्यति क्रौञ्चो म्रियते मत्तकोकिलः ॥१२॥

IAST

Cakorasya virajyete nayane viṣadarśanāt |
Suvyaktaṃ mādyati krauñco mriyate mattakokilaḥ ||12||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
चकोरस्य	चकोर पक्षी की
विरज्येते	विकृत/रंगहीन हो जाती हैं
नयने	आँखें
विषदर्शनात्	विष/सर्प देखने मात्र से

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
सुव्यक्तम्	स्पष्ट रूप से
माद्यति	मस्त/उन्मत्त हो जाता है
क्रौञ्चः	क्रौञ्च (बगुला/सारस)
म्रियते	मर जाता है
मत्तकोकिलः	मस्त कोयल

भावार्थ
विष/सर्प देखने मात्र से चकोर की आँखें विकृत हो जाती हैं; क्रौञ्च पक्षी उन्मत्त हो जाता है; तथा मत्त-कोयल मर जाता है। ये विष-सूचक प्राकृतिक 'टेस्टर' हैं।

दार्शनिक विवेचन

यह 'जीव-प्रतिक्रिया-विज्ञान' है – विभिन्न प्रजातियों की विष-संवेदनशीलता भिन्न-भिन्न होती है। आयुर्वेद-विषतन्त्र में इन पक्षियों को 'विष-सूचक-प्राणी' माना गया है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'टॉक्सिकोलॉजी' में 'सेंटिनल-प्रजाति' – जैसे कैनरी-पक्षी कोयला-खदान में गैस-सूचक रखा जाता था। यह श्लोक 'जैव-सूचक' अवधारणा को २००० वर्ष पूर्व प्रस्थापित करता है।

श्लोक १३ (जीवञ्जीव-ग्लानि एवं अन्यतम-परीक्षण)

श्लोक

जीवञ्जीवस्य च ग्लानिर्जायते विषदर्शनात् ।
तेषामन्यतमेनापि समश्नीयात् परीक्षितम् ॥१३॥

IAST

Jīvañjīvasya ca glānir jāyate viṣadarśanāt |
Teṣām anyatamenāpi samaśnīyāt parīkṣitam ||13||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
जीवञ्जीवस्य	जीवञ्जीव पक्षी की

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
ग्लानिः	आलस्य/शिथिलता
जायते	उत्पन्न होती है
विषदर्शनात्	विष देखने से
तेषाम्	इन (उपर्युक्त) पक्षियों में से
अन्यतमेन	किसी एक के द्वारा
समश्नीयात्	भोजन-परीक्षण करना चाहिए
परीक्षितम्	जाँचा हुआ

भावार्थ

जीवञ्जीव पक्षी भी विष-दर्शन मात्र से ग्लानि (शिथिलता) हो जाता है। अतः राजा को इन सभी पक्षियों में से किसी एक द्वारा भी भोजन का परीक्षण करा लेना चाहिए। पक्षी-द्वारा प्राकृतिक-परीक्षण विश्वसनीय साधन है।

दार्शनिक विवेचन

'अन्यतमेन' – अर्थात् विविध पक्षियों में से कोई एक – इससे 'वैविध्य-नियम' (Multiple indicators) का बोध होता है। यह न्याय-शास्त्र के 'कार्य-कारण-भाव' पर आधारित है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फूड-टेस्टिंग' में 'सेंटिनल-पशु-निगरानी' (जैसे मुर्गियाँ) अभी भी खेतों में विषैले पदार्थों के सूचक हैं। यह श्लोक 'जैव-परीक्षण' का प्राचीन विधान है।

श्लोक १४ (मयूर-पृषतोत्सर्ग – सर्प-निवारण)

श्लोक

मयूरपृषतोत्सर्गान्न भवन्ति भुजङ्गमाः ।
तस्मान्मयूरपृषतौ भवने नित्यमुत्सृजेत् ॥१४॥

IAST

Mayūrapṛṣatotsargānna bhavanti bhujaṅgamāḥ |
Tasmān mayūrapṛṣatau bhavane nityamutsṛjet ||14||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
मयूरपृषत	मोर के पंख/पूँछ-चित्तियाँ
उत्सर्गात्	फैलाने/छिड़कने से
न भवन्ति	नहीं होते
भुजङ्गमाः	सर्प
तस्मात्	इसलिए
मयूरपृषतौ	मोर-पंख
भवने	भवन में
नित्यम्	सदा
उत्सृजेत्	फैलाए/रखे

भावार्थ
मोर के पंखों/चित्तियों को फैलाने से सर्प नहीं आते। इसलिए राजा को अपने भवन/रसोईघर में मोर-पंख सदा रखने/फैलाने चाहिए। मोर सर्प-शत्रु है, उसकी उपस्थिति/चिह्न सर्पों को भगा देता है।

दार्शनिक विवेचन

यह 'प्राकृत-विष-निवारण-विज्ञान' है – मोर के पंखों में निहित रासायनिक-गन्ध सर्पों को विकर्षित करती है। यह 'गन्ध-विज्ञान' एवं 'प्राकृत-शत्रु-सिद्धान्त' पर आधारित है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'जैविक-कीट-नियंत्रण' में प्राकृतिक-शत्रु (जैसे मोर-सर्प सम्बन्ध) का सिद्धान्त कार्य करता है। 'मोर-पंख' की गन्ध सर्प-निवारक 'इको-फ्रेंडली' स्प्रे का प्राचीन रूप है।

श्लोक १५ (अग्नि-परीक्षा एवं वयः-परीक्षा)

श्लोक

भोज्यमन्नं परीक्षार्थं प्रदद्यात्पूर्वमग्नये ।
वयोभ्यश्च ततो दद्यात्तत्र लिङ्गानि लक्षयेत् ॥१५॥

IAST

Bhojyam annaṃ parīkṣārthaṃ pradadyāt pūrvam agnaye |
Vayobhyaś ca tato dadyāt tatra liṅgāni lakṣayet ||15||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
भोज्यम्	भोजन
परीक्षार्थम्	परीक्षण के लिए
प्रदद्यात्	दे
पूर्वम्	पहले
अग्नये	अग्नि (हवन-अग्नि) को
वयोभ्यः	पक्षियों को
ततः	उसके बाद
दद्यात्	दे
तत्र	उस परीक्षण में
लिङ्गानि	चिह्न/लक्षण
लक्षयेत्	ध्यान से देखे

भावार्थ
राजा को परीक्षणार्थ भोजन-अन्न को पहले अग्नि (हवन-अग्नि) में आहुति देना चाहिए, तथा तत्पश्चात् उसे पक्षियों को देना चाहिए। उन दोनों (अग्नि एवं पक्षी) के लक्षणों/प्रतिक्रियाओं को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए – इससे विष-दूषण का ज्ञान होता है।

दार्शनिक विवेचन

'अग्नि-परीक्षा' – विष-युक्त पदार्थ अग्नि में नीली/विकृत ज्वाला देता है; 'वयः-परीक्षा' – पक्षियों की मृत्यु/उन्माद से विष-ज्ञान। यह 'प्रमाण-त्रय' (दर्शन-अनुमान-प्रत्यक्ष) का प्रयोग है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'खाद्य-सुरक्षा-प्रोटोकॉल' में भी 'टेस्ट-किचन' (प्रथम सैम्पल) एवं 'प्राणी-परीक्षण' किया जाता है। 'अग्नि-परीक्षा' का विकृत रूप 'फ्लेम-टेस्ट' आज भी प्रयोगशालाओं में विष-तत्वों की पहचान हेतु किया जाता है।

श्लोक १६ (अग्नि-लक्षण एवं वय-मरण)

श्लोक

धूमार्चिर्नीलता वह्नेः शब्दस्फोटश्च जायते ।
अन्नेन विषदिग्धेन वयसां मरणं भवेत् ॥१६॥

IAST

Dhūmārcir nīlatā vahneḥ śabdasphoṭaś ca jāyate |
Annena viṣadigdhena vayasāṃ maraṇaṃ bhavet ||16||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
धूमार्चिः	धुआँ और ज्वाला
नीलता	नीलेपन/नीला रंग
वह्नेः	अग्नि की
शब्दस्फोटः	चटकने/फूटने की आवाज
जायते	उत्पन्न होती है
अन्नेन	अन्न/भोजन से
विषदिग्धेन	विष-लिप्त
वयसाम्	पक्षियों की
मरणम्	मृत्यु

भावार्थ

विष-लिप्त अन्न को अग्नि में डालने पर धुएँ में नीलापन तथा चटकने/फूटने की आवाज उत्पन्न होती है; तथा उसी विष-दूषित अन्न को खाने से पक्षियों की मृत्यु हो जाती है। ये दोनों ही विष-दूषण के सिद्ध लक्षण हैं।

दार्शनिक विवेचन

'नीलता' एवं 'शब्दस्फोट' – ये 'रासायनिक-अभिक्रिया' के लक्षण हैं – विष-तत्वों (जैसे आर्सेनिक) का अग्नि में विशिष्ट दहन-विकिरण। यह 'विज्ञान-सम्मत-जाँच' है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फोरेंसिक-रसायन' में 'फ्लेम-टेस्ट' एवं 'गैस-क्रोमैटोग्राफी' अग्नि-प्रतिक्रिया (नीली ज्वाला) देखते हैं। 'पशु-मृत्यु' आज भी 'टॉक्सिकोलॉजी-प्रयोगशाला' में प्रयुक्त होती है।

श्लोक १७ (विष-दूषित अन्न के भौतिक लक्षण)

श्लोक

अक्लिन्नता सोदकत्वमाशुशैत्यं विवर्णता ।
अन्नस्य विषदिग्धस्य तथा स्निग्धत्वमेव च ॥१७॥

IAST

Aklinnatā sodakatvam āśuśaityaṃ vivarṇatā |
Annasya viṣadigdhasya tathā snigdhatvam eva ca ||17||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अक्लिन्नता	न भीगना/सूखापन
सोदकत्वम्	अत्यधिक जल/नमी
आशुशैत्यम्	शीघ्र ठण्डा होना
विवर्णता	रंग-विकृति/फीकापन
अन्नस्य	अन्न/भोजन की
विषदिग्धस्य	विष-लिप्त/दूषित
स्निग्धत्वम्	अत्यधिक चिकनाई/तैलीयता

भावार्थ

विष-दूषित अन्न के छः लक्षण होते हैं – अक्लिन्नता (जो पकना चाहिए वह न पके), सोदकत्व (अत्यधिक पानीदार), आशुशैत्य (शीघ्र ठण्डा होना), विवर्णता (रंग खोना), अत्यधिक स्निग्धता (चिकनापन)। ये बाह्य-इन्द्रिय-ग्राह्य लक्षण हैं।

दार्शनिक विवेचन

ये 'प्रत्यक्ष-लक्षण' हैं – रसायनिक-विष अन्न की प्राकृतिक-संरचना (जल-ताप-घनत्व) को बदल देते हैं। 'आशुशैत्यम्' – विष ऊष्मा-अवशोषक या रासायनिक-अभिक्रिया को धीमा कर देता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'खाद्य-सुरक्षा' (FSSAI) में 'संवेदी-परीक्षण' – रंग, बनावट, तापमान, नमी – ये सभी विषैले तत्वों के प्रारम्भिक संकेत हैं।

श्लोक १८ (व्यञ्जन एवं गन्ध-स्पर्श-रस-नाश)

श्लोक

व्यञ्जनस्याशु शुष्कत्वं क्वथने श्यामफेनता ।
गन्धस्पर्शरसाश्चैव नश्यन्ति विषदूषणात् ॥१८॥

IAST

Vyañjanasyāśu śuṣkatvaṃ kvathane śyāmaphenatā |
Gandhasparśarasāś caiva naśyanti viṣadūṣaṇāt ||18||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
व्यञ्जनस्य	दाल/तरकारी/रस्से की
आशु	शीघ्र
शुष्कत्वम्	सूखापन/रस-हीनता
क्वथने	उबालने पर
श्यामफेनता	कालिख/काले रंग का झाग
गन्ध	सुगंध
स्पर्श	स्पर्श
रसाः	रस (स्वाद)

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
नश्यन्ति	नष्ट हो जाते हैं
विषदूषणात्	विष-दूषण के कारण

भावार्थ

विष-दूषित व्यञ्जन में – शीघ्र सूखापन, उबालने पर काले रंग का झाग/फेन, तथा उसके गन्ध, स्पर्श एवं रस – तीनों नष्ट हो जाते हैं। ये विष-सूचक प्रबल-लक्षण हैं।

दार्शनिक विवेचन

'गन्ध-स्पर्श-रस' – ये तीन 'तन्मात्राएँ' हैं, जो वैशेषिक-दर्शन में 'शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध' में से हैं। विष इन गुणों को नष्ट/विकृत कर देता है – अर्थात् 'तन्मात्रा-विकृति' ही विष-दूषण है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फूड-टेस्टिंग' में – यदि दाल/सब्जी जल्दी सूखे, उबालने पर काला-झाग बने, एवं प्राकृतिक गन्ध/स्वाद गायब हो – तो वह 'ऑक्सीडेटिव-रैंसिडिटी' या 'भारी-धातु-दूषण' का संकेत है।

श्लोक १९ (द्रव-पदार्थों की छाया, रेखा एवं फेन)

श्लोक

छायातिरिक्ता हीना वा स्याद्रसे विषदूषिते ।
दृश्यते राजिरूर्ध्वा च फेनमण्डलमेव च ॥१९॥

IAST

Chāyātiriktā hīnā vā syād rase viṣadūṣite |
Dṛśyate rājir ūrdhvā ca phenamaṇḍalam eva ca ||19||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
छाया	प्रतिबिम्ब/परछाईं
अतिरिक्ता	अधिक/बड़ी
हीना	कम/छोटी
रसे	रस/द्रव-पदार्थ में

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विषदूषिते	विष-दूषित
दृश्यते	दिखाई देती है
राजिः	रेखा/धारी
ऊर्ध्वा	ऊर्ध्वगामी
फेनमण्डलम्	फेन (झाग) का मण्डल/घेरा

भावार्थ

विष-दूषित द्रव (रस) में उसकी छाया या तो बहुत बड़ी या बहुत छोटी हो जाती है; तथा उसमें ऊर्ध्वगामी रेखा एवं फेन-मण्डल (झागों का घेरा) स्पष्ट दिखाई देता है। तरल-पदार्थों में विष के विशेष दृश्य-लक्षण होते हैं।

दार्शनिक विवेचन

'छाया' – प्रकाशीय-गुण – विष-तत्व द्रव के अपवर्तनांक को बदल देते हैं। 'राजिः' एवं 'फेन' – पृष्ठ-तनाव एवं श्यानता में परिवर्तन। यह 'भौतिक-रसायन' का अति-प्राचीन व्यवहार-ज्ञान है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'प्रयोगशाला-जाँच' में 'रेफ्रेक्टोमीटर' एवं 'विस्कोसिटी-टेस्ट' ठीक यही मापते हैं – विषैले पदार्थ तरल के अपवर्तनांक एवं सतह-तनाव को बदल देते हैं।

श्लोक २० (विभिन्न द्रवों के विशेष-रंग – निष्कर्ष)

श्लोक

रसस्य नीला पयसश्च ताम्रा
मद्यस्य तोयस्य च कोकिलाभा ।
श्यामा च दध्नो विषदूषितस्य
मध्ये भवत्यूर्ध्वगता च रेखा ॥२०॥

IAST

Rasasya nīlā payasaś ca tāmrā |
Madyasya toyasya ca kokilābhā |
Śyāmā ca dadhno viṣadūṣitasya |
Madhye bhavaty ūrdhvagatā ca rekhā ||20||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
रसस्य	शोरबा/सूप का – नीला
पयसः	दूध/जल का – ताम्र (ताम्बा-सा)
मद्यस्य	मदिरा/शराब का – कोकिल-आभा (नील-काला)
तोयस्य	जल का – कोकिल-आभा
श्यामा	दही का – श्याम (काला-साँवला)
विषदूषितस्य	विष-दूषित होने पर
मध्ये	द्रव के मध्य में
ऊर्ध्वगता	ऊर्ध्वगामी
रेखा	रेखा/धारी

भावार्थ

विष-दूषित होने पर विभिन्न द्रव्यों के विशेष रंग-परिवर्तन होते हैं – रस (शोरबा) – नीला; दूध/जल – ताम्र-वर्ण; मद्य – कोकिल के समान (नील-काला); जल – कोकिल-आभा; दही – श्याम। तथा इन सभी के मध्य में ऊर्ध्वगामी रेखा दिखाई देती है। यह विष-पहचान का अन्तिम एवं सर्वाधिक सूक्ष्म-प्रमाण है।

दार्शनिक विवेचन

यह 'विष-विज्ञान' (Toxicology) का 'विशिष्ट-प्रतिक्रिया-सिद्धान्त' है – विभिन्न रसायन (विष-प्रकार) विभिन्न द्रव-माध्यमों में भिन्न-भिन्न रंग-विकिरण उत्पन्न करते हैं। 'ऊर्ध्वगता रेखा' – विष-तत्वों का तरल-घनत्व से भिन्न होना।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फोरेंसिक-टॉक्सिकोलॉजी' में 'कलरिमेट्रिक-टेस्ट' (नेस्लर-अभिकर्मक, मार्की-टेस्ट) विभिन्न तरल-पदार्थों में रंग-परिवर्तन देखकर विष-प्रकार (आर्सेनिक, साइनाइड, मेथनॉल) की पहचान करते हैं।

श्लोक २१ (आर्द्र/नम पदार्थों के विष-लक्षण)

श्लोक

आर्द्रस्य सर्वस्य भवेत् तु सद्यः
प्रम्लानभावो विषदूषितस्य ।
उत्पक्वता क्वाथविनीलता च
प्रश्यामता चेति वदन्ति तज्ज्ञाः ॥२१॥

IAST

Ārdrasya sarvasya bhavet tu sadyaḥ
pramlānabhāvo viṣadūṣitasya |
Utpakvatā kvāthavinīlatā ca
praśyāmatā ceti vadanti tajjñāḥ ||21||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
आर्द्रस्य	नम/गीले पदार्थ के
सर्वस्य	सभी प्रकार के
सद्यः	तुरंत
प्रम्लानभावः	मुरझाने/क्षीण होने की स्थिति
विषदूषितस्य	विष-दूषित होने पर
उत्पक्वता	अत्यधिक पक जाना/गल-सड़ जाना
क्वाथविनीलता	काढ़े/रस में नीलापन
प्रश्यामता	अत्यधिक कालापन/श्यामता
तज्ज्ञाः	विष-विशेषज्ञ

भावार्थ
विष-विशेषज्ञ कहते हैं कि विष-दूषित आर्द्र पदार्थों (फल, सब्जी, माँस, पकवान) में शीघ्र मुरझाना, अत्यधिक गल-सड़

जाना, काढ़े/रस में नीला-पन तथा अत्यधिक कालापन – ये चार लक्षण उत्पन्न होते हैं। ये सभी विष-उपस्थिति के तात्कालिक एवं दृश्य-संकेत हैं।

दार्शनिक विवेचन

'आर्द्र' पदार्थ जल-युक्त (जैविक) होते हैं; विष उनके एंजाइम-नाश एवं किण्वन-प्रक्रिया को तीव्र/विकृत कर देता है। 'उत्पक्वता' – विष ऊष्मा-अभिक्रिया को असामान्य बना देता है – यह 'रासायनिक-अस्थिरता' का सूचक है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'खाद्य-सुरक्षा' (FSSAI) में विषैले/दूषित खाद्य पदार्थ (जैसे एफ्लाटॉक्सिन-युक्त) शीघ्र-फफूंदी, रंग-परिवर्तन (नीलापन/कालापन) एवं गलन-गन्ध उत्पन्न करते हैं – ये 'संवेदी-परीक्षण' के मानक-संकेत हैं।

श्लोक २२ (शुष्क पदार्थों के विष-लक्षण)

श्लोक

शुष्कस्य सर्वस्य विषोपदेहाद्
विशीर्णता चाशुविवर्णता च ।
खरं मृदु स्यान् मृदुनः खरत्वं
तदन्तिके चाल्पकजन्तुघातः ॥२२॥

IAST

Śuṣkasya sarvasya viṣopadehād
viśīrṇatā cāśuvivarṇatā ca |
Kharaṃ mṛdu syān mṛdunaḥ kharatvaṃ
tadantike cālpakajantughātaḥ ||22||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
शुष्कस्य	सूखे पदार्थ के
सर्वस्य	सभी प्रकार के
विषोपदेहात्	विष के लेप/संसर्ग से
विशीर्णता	चूर-चूर/भुरभुरा होना
आशुविवर्णता	शीघ्र रंग-विकृति

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
खरम्	(जो कठोर है) वह मृदु हो जाए
मृदुनः	(जो मृदु है) उसका खरत्व
तदन्तिके	उसके निकट
अल्पकजन्तुघातः	छोटे-छोटे कीटों/जन्तुओं की मृत्यु

भावार्थ

विष-लेप/संसर्ग से सूखे पदार्थों (अन्न, मसाले, औषधि-चूर्ण) में – (१) विशीर्णता (चूरा/भुरभुरापन), (२) शीघ्र रंग-विकृति (फीकापन), (३) कठोर पदार्थ नरम तथा नरम पदार्थ कठोर हो जाना, तथा (४) उस पदार्थ के आस-पास छोटे-छोटे कीटों/जन्तुओं (चींटी, मक्खी) की मृत्यु हो जाती है।

दार्शनिक विवेचन

'विशीर्णता' – विष शुष्क-पदार्थ के आणविक-बन्ध को तोड़ देता है, जिससे भुरभुरापन आता है। 'खरं मृदु' – विष भौतिक-गुण (कठोरता/नम्यता) को उलट देता है – यह 'रासायनिक-जलन' का लक्षण है। 'जन्तुघातः' – विष-गन्ध/अवशेष कीटों के लिए घातक है – यह 'जैव-सूचक' सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'खाद्य-प्रसंस्करण' में कीटनाशक/भारी-धातु-दूषित मसालों/अन्न (शुष्क) में भुरभुरापन, रंग-फीकापन, एवं निकट-कीट-मृत्यु दूषण-संकेत हैं – ये 'भौतिक-परीक्षण' के महत्वपूर्ण मानदंड हैं।

श्लोक २३ (वस्त्र-आसन-विछौनों के विष-लक्षण)

श्लोक

प्रावारास्तरणानां च श्याममण्डलकीर्णता ।
तन्तूनां पक्ष्मणां लोम्नां स्याद् भ्रंशश् च विषाश्रयात् ॥२३॥

IAST

Prāvārāstaraṇānāṃ ca śyāyamaṇḍalakīrṇatā |
Tantūnāṃ pakṣmaṇāṃ lomnāṃ syād bhraṃśaś ca viṣāśrayāt ||23||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
प्रावार	ऊनी वस्त्र/शॉल/आवरण
आस्तरण	आसन/बिछौना/गद्दा
श्याममण्डलकीर्णता	काले-धब्बों का बिखराव
तन्तूनाम्	तन्तु/धागों/रेशों की
पक्ष्मणाम्	पलकों/रोम की
लोम्नाम्	लोम/रोएँ/बाल
भ्रंशः	गिरना/झड़ना/क्षय
विषाश्रयात्	विष-संसर्ग से

भावार्थ
विष-संसर्ग से वस्त्र/बिछौनों में काले-धब्बों का बिखराव हो जाता है; तथा रेशों, पलकों/रोएँ का झड़ना/क्षय आरम्भ हो जाता है। वस्त्रों/आसनों पर विष-दाग एवं रेशे-टूटना विष-स्पर्श के स्पष्ट संकेत हैं।

दार्शनिक विवेचन

'प्रावारास्तरण' – राजा के सम्पर्क में आने वाले निकटतम-पदार्थ (वस्त्र/गद्दा)। विष (संक्षारक-द्रव/स्पर्श-विष) रेशों के प्रोटीन/सेलुलोज़ को तोड़कर 'धब्बे' (रासायनिक-दाग) एवं 'भ्रंश' (संरचनात्मक-क्षति) उत्पन्न करता है – यह 'स्पर्श-विष-परीक्षा' का अंग है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फोरेंसिक' में विषैले रसायनों (एसिड, कास्टिक) के संपर्क में आए वस्त्रों पर काले/भूरे दाग (श्याममण्डल) एवं रेशों का टूटना (भ्रंश) – ये 'रासायनिक-आघात' के प्रमुख-संकेत हैं।

श्लोक २४ (धातु-मणि-आभूषणों के विष-लक्षण)

श्लोक

लोहानां च मणीनां च मलपङ्कोपदिग्धता ।
प्रभावस्नेहगुरुतावर्णस्पर्शवधस् तथा ॥२४॥

IAST

Lohānāṃ ca maṇīnāṃ ca malapaṅkopadigdhātā |
Prabhāvasnehagurutāvarṇasparśavadhastathā ||24||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
लोहानाम्	धातुओं (लोहा, ताँबा आदि) की
मणीनाम्	रत्नों/मणियों की
मलपङ्कोपदिग्धता	मल/कीचड़-समान लेप/दाग
प्रभा	चमक/कांति
स्नेह	चिकनाई/तैलीयता
गुरुता	भारीपन/घनत्व
वर्ण	रंग
स्पर्श	स्पर्श-गुण
वधः	नाश/क्षय

भावार्थ

विष-संसर्ग से धातुओं (आभूषण/बर्तन) एवं मणि-रत्नों में – (१) मल/कीचड़-सदृश लेप, (२) चमक का नाश, (३) चिकनाई का नाश, (४) भारीपन/घनत्व में परिवर्तन, (५) रंग एवं (६) स्पर्श – इन सबका क्षय हो जाता है। धातु-रत्नों पर विष-प्रतिक्रिया अत्यन्त स्पष्ट होती है।

दार्शनिक विवेचन

धातुएँ (लोहा, सोना, ताँबा) एवं रत्न विष-रसायनों (आर्सेनिक, सल्फ्यूरिक अम्ल) के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होते हैं – विष उनकी सतह-संरचना (Oxidation/Corrosion) को बदल देता है – यह 'रासायनिक-संकेतक' का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फोरेंसिक-धातु-विश्लेषण' – विषैले-गैस/तरल (क्लोरीन, पारा) धातुओं पर दाग, रंग-परिवर्तन एवं सतह-क्षति उत्पन्न करते हैं। 'मणियों' पर रासायनिक-प्रभाव आज 'जेमोलॉजिकल-टेस्ट' का अंग है।

श्लोक २५ (राजा में विष-प्रभाव के शारीरिक-लक्षण)

श्लोक

संशुष्कश्यामवक्त्रत्वं वाग्भङ्गो जृम्भणं मुहुः ।
स्खलनं वेपथुः स्वेदो ह्य् आवेशो दिग्विलोकनम् ॥२५॥

IAST

Saṃśuṣkaśyāmavaktratvaṃ vāgbhaṅgo jṛmbhaṇaṃ muhuḥ |
Skhalanaṃ vepathuḥ svedo hy āveśo digvilokanam ||25||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
संशुष्क	अत्यधिक सूखा
श्याम	काला/साँवला
वक्त्रत्वम्	मुख/मुँह का होना
वाग्भङ्गः	वाणी-भंग/हकलाना
जृम्भणम्	जम्हाई
मुहुः	बार-बार
स्खलनम्	लड़खड़ाना/गिरना
वेपथुः	कम्पन/थरथराहट
स्वेदः	पसीना
आवेशः	उन्माद/आवेग
दिग्विलोकनम्	इधर-उधर देखना/भ्रमित-दृष्टि

भावार्थ

राजा में विष-प्रभाव होने पर आठ शारीरिक/मानसिक लक्षण उत्पन्न होते हैं – (१) अत्यधिक सूखा-काला मुँह, (२) वाणी-

रुकना/हकलाना, (३) बार-बार जम्हाई, (४) लड़खड़ाना, (५) कम्पन, (६) पसीना, (७) उन्माद/आवेग, (८) भ्रमित-दिशा-दृष्टि। ये विष-क्रिया के त्वरित-चिह्न हैं।

दार्शनिक विवेचन

ये सभी 'विष-लक्षण' आधुनिक-न्यूरोटॉक्सिन (तंत्रिका-विष) एवं हेमोटॉक्सिन (रक्त-विष) के प्रभाव हैं – मुँह-सूखापन (निर्जलीकरण), वाग्भंग (तंत्रिका-पक्षाघात), जम्हाई (ऑक्सीजन-अभाव), कम्पन (तंत्रिका-उत्तेजना), पसीना (स्वायत्त-तंत्रिका-प्रतिक्रिया), आवेश (मस्तिष्क-प्रभाव), भ्रमित-दृष्टि (दृष्टि-तंत्रिका-आघात) – यह 'क्लिनिकल-टॉक्सिकोलॉजी' है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'चिकित्सा-विज्ञान' में विषाक्तता के लक्षण – शुष्क-काला मुँह, डिसरथ्रिया, बार-बार जम्हाई, गतिभंग, कम्पन, पसीना, साइकोसिस – ये सभी 'ईआर-प्रोटोकॉल' में विष-पहचान हेतु मानक लक्षण हैं।

श्लोक २६ (अस्थिरता – अन्तिम लक्षण एवं विषदाता-पहचान)

श्लोक

स्वकर्मणि स्वभूमौ स्याद् अनवस्थानम् एव च ।
लिङ्गान्य् एतानि निपुणं लक्षयेद् विषदायिनाम् ॥२६॥

IAST

Svakarmaṇi svabhūmau syād anavasthānam eva ca|
Liṅgāny etāni nipuṇaṃ lakṣayed viṣadāyinām ||26||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
स्वकर्मणि	अपने कार्य में
स्वभूमौ	अपने स्थान/क्षेत्र में
अनवस्थानम्	अस्थिरता/बैचैनी
लिङ्गानि	(उपर्युक्त) लक्षण/चिह्न
एतानि	ये (सभी)
निपुणम्	कुशलतापूर्वक
लक्षयेत्	ध्यान से देखे/पहचाने

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विषदायिनाम्	विष देने वालों (षड्यन्त्रकारियों) के

भावार्थ
विष-प्रभाव में (राजा में) अपने कार्य एवं स्थान पर अस्थिरता/बेचैनी भी उत्पन्न होती है। राजा को इन सभी उपर्युक्त लक्षणों को निपुणतापूर्वक पहचानना चाहिए, तथा उन लक्षणों से विष-दाताओं की पहचान करनी चाहिए। पहचान ही रक्षा का प्रथम चरण है।

दार्शनिक विवेचन

'अनवस्थानम्' – यह 'मानसिक-असंतुलन' है, जो विष के तंत्रिका-प्रभाव का परिणाम है। 'विषदायिनाम्' – राजा को केवल लक्षण-पहचान नहीं, बल्कि कारण-अन्वेषण एवं अपराधी-निर्धारण भी करना चाहिए – यह 'सुरक्षा-प्रतिरोध' का प्राचीन सूत्र है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'सुरक्षा-व्यवस्था' (Security protocol) में यदि VIP में विषाक्तता-लक्षण दिखें, तो 'कोर-टीम' तुरंत 'सोर्स-ट्रेसिंग' एवं 'संदिग्ध-कर्मी-पहचान' आरम्भ करती है – यही 'घटना-प्रतिक्रिया' का मूलमन्त्र है।

श्लोक २७ (औषधि-जल-भोजन की परीक्षा एवं परिचारक-चखना)

श्लोक

औषधानि च सर्वाणि पानं पानीयम् एव च ।
तत्कल्पकैः समास्वाद्य प्राश्नीयाद् भोजनानि च ॥२७॥

IAST

Auṣadhāni ca sarvāṇi pānaṃ pānīyam eva ca |
Tatkalpakaiḥ samāsvādya prāśnīyād bhojanāni ca ||27||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
औषधानि	औषधियाँ
सर्वाणि	सभी
पानम्	पेय (दूध/शराब आदि)
पानीयम्	सामान्य जल

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
तत्कल्पकैः	उनके बनाने वालों/परिचारकों (रसोइया) द्वारा
समास्वाद्य	चखकर
प्राश्नीयात्	(राजा को) ग्रहण करना चाहिए
भोजनानि	भोजन-व्यंजन

भावार्थ
राजा को सभी औषधियाँ, पेय-पदार्थ, जल तथा भोजन-व्यंजन – उन्हें बनाने वाले परिचारकों/रसोइयों द्वारा पहले चखकर ही ग्रहण करना चाहिए। यह 'प्राक्-परीक्षण' की परम्परा है, जिसे 'राज-भोजन-परीक्षक' (Royal taster) कहा गया है।

दार्शनिक विवेचन

'तत्कल्पकैः' – अर्थात् जिन्होंने उसे बनाया है (रसोइया/वैद्य) – वे ही पहले चखें। यह 'आत्म-बलि-सिद्धान्त' (Self-sacrifice principle) है – यदि विष होगा तो चखने वाला मरेगा, राजा बचेगा। यह 'परोक्ष-प्रमाण' – चखने वाले के स्वास्थ्य से विष-ज्ञान – पर आधारित है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सुरक्षा-प्रोटोकॉल' में 'Royal Tester' (Food Taster/Security Kitchen Staff) आज भी कई देशों (रूस, ब्रिटेन) में राष्ट्राध्यक्षों के लिए नियुक्त किए जाते हैं। यह 'टैम्पर-एविडेंट' व्यवस्था का अंग है।

श्लोक २८ (सौंदर्य-प्रसाधन एवं वस्तुओं की मुद्रांकित-जाँच)

श्लोक

प्रसाधनादि यत्किंचित् तत् सर्वं परिचारकाः ।
उपनिन्युर् नरेन्द्राय सुपरीक्षितमुद्रितम् ॥२८॥

IAST

Prasādhanādi yatkiṃcit tat sarvaṃ paricārakāḥ |
Upaninyur narendrāya suparīkṣitamudritam ||28||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
प्रसाधनादि	सौंदर्य-प्रसाधन, तेल, इत्र, काजल आदि

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
यत्किंचित्	जो कुछ भी
परिचारकाः	सेवक/दास/अनुचर
उपनिन्युः	लेकर आएँ
नरेन्द्राय	राजा को
सुपरीक्षित	अच्छी तरह परीक्षित/जाँचा हुआ
मुद्रितम्	मुद्रांकित/सील-मुहर लगा हुआ

भावार्थ

सौंदर्य-प्रसाधन (इत्र, तेल, काजल, माला, वस्त्र-सज्जा आदि) – ये सब वस्तुएँ परिचारक भली-भाँति परीक्षित एवं मुद्रांकित (सील-मुहर) करके राजा के पास लाएँ। इससे कोई भी बाहरी/अनधिकृत व्यक्ति उनमें विष/छेड़छाड़ न कर सके।

दार्शनिक विवेचन

'प्रसाधनादि' – शरीर-स्पर्शी वस्तुएँ (सौंदर्य-प्रसाधन, इत्र) स्पर्श-विष (Contact poison) का माध्यम बन सकती हैं। 'मुद्रितम्' – मुहर (Seal/Tamper-evident) – यह 'प्राचीन-सुरक्षा-तकनीक' है – मुहर-टूटने पर छेड़छाड़-ज्ञान। यह अर्थशास्त्र के 'संवृत-मुद्रा' (Sealed system) सिद्धान्त से मेल खाता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सुरक्षा' में प्रसाधन-सामग्री (Cosmetics, Perfumes) की जाँच एवं 'सील्ड-पैकेजिंग' (Tamper-proof seals) अनिवार्य है। आज यह 'बायोमेट्रिक-लॉक' एवं 'होलोग्राम-सील' का रूप ले चुका है – यही 'छेड़छाड़-रोधी-पैकेजिंग' का प्राचीन स्वरूप है।

श्लोक २९ (बाह्य-आगत-वस्तुओं की परीक्षा एवं राजा-रक्षक-कर्तव्य)

श्लोक

परस्माद् आगतं यच् च तत् तत् सर्वं परीक्षयेत् ।
स्वेभ्यः परेभ्यश् च तदा रक्ष्यो राजा हि रक्षिता ॥२९॥

IAST

Parasmād āgataṃ yac ca tat tat sarvaṃ parīkṣayet |
Svebhyaḥ parebhyaś ca tadā rakṣyo rājā hi rakṣitā ||29||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
परस्मात्	बाहर/अन्य (व्यक्ति/देश) से
आगतम्	आया हुआ
तत्-तत्	उस-उस (प्रत्येक वस्तु) को
परीक्षयेत्	जाँच/परीक्षण करे
स्वेभ्यः	अपने (लोगों) से
परेभ्यः	दूसरों/शत्रुओं से
रक्ष्यः	रक्षा करने योग्य
राजा	राजा
रक्षिता	(क्योंकि) वह (स्वयं) रक्षक है

भावार्थ

बाहर (अन्य देश/व्यक्ति) से आई हुई प्रत्येक वस्तु (भेंट, पत्र, वस्त्र, आभूषण, भोजन) की राजा को पूरी परीक्षा करनी चाहिए। राजा को अपने ही लोगों तथा दूसरों/शत्रुओं – दोनों से सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि राजा स्वयं 'रक्षिता' (प्रजा-रक्षक) है; यदि वह स्वयं असुरक्षित होगा तो प्रजा-रक्षा कैसे करेगा? अतः आत्मरक्षा ही प्रथम कर्तव्य है।

दार्शनिक विवेचन

'स्वेभ्यः परेभ्यश्च' – आन्तरिक एवं बाह्य – दोनों प्रकार के शत्रु। 'राजा हि रक्षिता' – अर्थात् 'जो रक्षक है, उसे स्वयं रक्षित होना चाहिए' – यह 'रक्षक-रक्षा-न्याय' (Protector-protected principle) है – जो शास्त्रों में 'आत्मरक्षा-धर्म' कहलाता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'राष्ट्रीय-सुरक्षा' एवं 'VIP-सुरक्षा' – विदेश-राजदूतों/नेताओं से प्राप्त सभी 'उपहार-पैकेज' की 'स्क्रीनिंग' अनिवार्य है। 'आन्तरिक-शत्रु' (स्वेभ्यः – घरेलू कर्मी) भी उतने ही खतरनाक हैं – यही 'इनसाइडर-थ्रेट' (Insider threat) का प्राचीन ज्ञान है।

श्लोक ३० (यान-वाहन एवं मार्ग-सुरक्षा)

श्लोक

यानवाहनम् आरोहेज् ज्ञातं ज्ञातोपपादितम् ।
अविज्ञातेन हि पथा सङ्कटेन च न व्रजेत् ॥३०॥

IAST

Yānavāhanam ārohej jñātaṃ jñātopapāditam |
Avijñātena hi pathā saṅkaṭena ca na vrajet ||30||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
यानवाहनम्	रथ/वाहन
आरोहेत्	चढ़े/प्रयोग करे
ज्ञातम्	ज्ञात/परिचित
ज्ञातोपपादितम्	जिसकी जाँच-परीक्षा ज्ञात हो
अविज्ञातेन	अज्ञात/अपरिचित
पथा	मार्ग से
सङ्कटेन	संकट-युक्त/खतरनाक
न व्रजेत्	यात्रा/गमन न करे

भावार्थ

राजा को केवल उसी वाहन पर आरोहण करना चाहिए, जो ज्ञात-सुरक्षित हो तथा जिसकी जाँच-परीक्षा कर ली गई हो। इसके अतिरिक्त, राजा को अज्ञात (अपरिचित) अथवा संकट-युक्त मार्ग से कभी यात्रा नहीं करनी चाहिए। वाहन-सुरक्षा एवं मार्ग-चयन – ये दोनों आत्मरक्षा के अन्तिम-प्रोटोकॉल हैं।

दार्शनिक विवेचन

'ज्ञातोपपादितम्' – वाहन को जाँचने वाला 'सारथि/महावत' स्वयं जानता है कि वाहन सुरक्षित है – यह 'प्रमाण-द्वय' (ज्ञान + परीक्षण) है। 'अविज्ञातेन पथा' – अज्ञात मार्ग 'अनिश्चितता' का स्रोत है, जो 'प्रमाद' है – योग-दर्शन में 'प्रमाद' को कष्ट-हेतु (दुःख का कारण) माना गया है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सुरक्षा' – राष्ट्राध्यक्षों के लिए 'निर्धारित-मार्ग' (Pre-swept route) एवं 'सुरक्षित-वाहन' (Armoured vehicle) अनिवार्य है। 'अज्ञात-मार्ग' एवं 'संकट-स्थल' से बचना – यह 'मूवमेंट-सिक्योरिटी' का आधार है, जो आज 'रूट-रैकी' (Route reconnaissance) के नाम से जाना जाता है।

श्लोक ३१ (आसन्न-परिचारकों का चयन)

श्लोक

वीक्षितादुष्टकर्माणम् आप्तं वंशक्रमागतम् ।
संविभक्तं च कुर्वीत जनम् आसन्नवर्तिनम् ॥३१॥

IAST

Vīkṣitāduṣṭakarmāṇam āptaṃ vaṃśakramāgatam |
Saṃvibhaktaṃ ca kurvīta janam āsannavartinam ||31||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
वीक्षित	परीक्षित/जाँचा हुआ
अदुष्टकर्माणम्	जिसके कर्म दोषरहित हों
आप्तम्	विश्वसनीय
वंशक्रमागतम्	पीढ़ियों से सेवारत
संविभक्तम्	(जो) विभक्त/पृथक (सम्मानित) हो
कुर्वीत	करे/नियुक्त करे
जनम्	व्यक्ति/सेवकों को
आसन्नवर्तिनम्	समीप रहने वाले (अंगरक्षक/परिचारक)

भावार्थ

राजा को अपने समीप रहने वाले परिचारकों/अंगरक्षकों में उन्हीं को नियुक्त करना चाहिए, जो परीक्षित, दोष-रहित-कर्मा, विश्वसनीय तथा पीढ़ियों से राज-परिवार की सेवा करने वाले हों, तथा उन्हें उचित सम्मान भी देना चाहिए। निकटतम सेवकों की निष्ठा ही राजा की प्रथम सुरक्षा-कवच है।

दार्शनिक विवेचन

'वंशक्रमागतम्' – पीढ़ी-दर-पीढ़ी सेवा करने वाले अनुचर न केवल विश्वसनीय होते हैं, बल्कि राज-परम्पराओं, रहस्यों एवं आदतों से परिचित होते हैं। 'संविभक्तम्' – उन्हें उचित सम्मान/वेतन देना उनकी निष्ठा को और दृढ़ करता है। यह 'पारिवारिक-व्यवस्था' पर आधारित है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सुरक्षा' में 'पर्सनल सिक्योरिटी डिटेल' (PSD) के सदस्यों का कड़ा बैकग्राउंड-वेरिफिकेशन एवं दीर्घकालिक निष्ठा-परीक्षण अनिवार्य है। पुराने एवं परीक्षित कर्मियों को ही सर्वाधिक निकटता दी जाती है।

श्लोक ३२ (दूर हटाने योग्य व्यक्ति)

श्लोक

अधार्मिकांश् च क्रूरांश् च दृष्टदोषान् निराकृतान् ।
परेभ्योऽभ्यागतांश् चैव दूराद् एतान् समाचरेत् ॥३२॥

IAST

Adhārmikāṃś ca krūrāṃś ca dṛṣṭadoṣān nirākṛtān |
Parebhyo'bhyāgatāṃś caiva dūrād etān samācaret ||32||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अधार्मिकान्	अधार्मिक (नीति-विहीन)
क्रूरान्	क्रूर (निर्दयी)
दृष्टदोषान्	जिनमें दोष (स्पष्ट) देखे गए हों
निराकृतान्	जिन्हें पहले ही निष्कासित किया जा चुका हो
परेभ्यः	शत्रुओं/बाहरी लोगों से
अभ्यागतान्	आए हुए (शरणागत/दलबदलू)
दूरात्	दूर से ही

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
समाचरेत्	(इनसे) व्यवहार/संपर्क न करे

भावार्थ
राजा को अधार्मिक, क्रूर, स्पष्ट-दोष-युक्त, पहले-निष्कासित, तथा शत्रुओं/बाहरी लोगों से आए हुए – इन सभी प्रकार के व्यक्तियों को अपने से दूर ही रखना चाहिए। ये पाँचों श्रेणियाँ असुरक्षा के कारण हैं; इन्हें समीप लाना राजा के विनाश का मूल है।

दार्शनिक विवेचन

'परेभ्योऽभ्यागतान्' – शत्रु-पक्ष से आए व्यक्ति संभावित जासूस या विष-दाता हो सकते हैं। 'दृष्टदोषान्' – जिनके दोष पहले ही दिख चुके हैं, उनमें सुधार की आशा न रखें। यह 'सतर्कता-सिद्धान्त' है – 'पाप-संग' (तमोगुण) से बचाव ही रक्षा-नीति है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'सुरक्षा-प्रोटोकॉल' में आपराधिक-पृष्ठभूमि, पूर्व-निष्कासित कर्मचारी, एवं शत्रु-राष्ट्रों से दलबदलू व्यक्तियों को 'संवेदनशील-स्थानों' से दूर रखा जाता है – यही 'सुरक्षा-साफ़-परिधि' (Security Cleared Perimeter) है।

श्लोक ३३ (नौका-यात्रा में सावधानी)

श्लोक

महावातसमुद्धूताम् अपरीक्षितनाविकाम् ।
अन्यनौप्रतिबद्धां वा नोपेयान् नावम् आतुराम् ॥३३॥

IAST

Mahāvātasamuddhūtām aparīkṣitanāvikām |
Anyanaupratibaddhāṃ vā nopeyān nāvam āturām ||33||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
महावात	तेज हवा/तूफान
समुद्धूताम्	(जो) उठी हुई/हिल-डोल रही हो
अपरीक्षितनाविकाम्	बिना परीक्षित नाविक/मल्लाह वाली
अन्यनौप्रतिबद्धाम्	दूसरी नौका/नाव से बँधी

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
नोपेयात्	समीप न जाए / उस पर न चढ़े
नावम्	नाव/जहाज
आतुराम्	रोगग्रस्त/जीर्ण/अस्थिर

भावार्थ
राजा को तूफ़ानी-हवा में उछलती हुई, बिना परीक्षित-नाविक वाली, अन्य नाव से बँधी हुई अथवा जीर्ण/अस्थिर – ऐसी किसी भी नाव के समीप नहीं जाना चाहिए, उस पर सवारी तो बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। जल-यात्रा अत्यन्त संवेदनशील होती है।

दार्शनिक विवेचन

'महावात' तथा 'अपरीक्षितनाविक' – प्राकृतिक एवं मानवीय – दोनों खतरे। 'अन्यनौप्रतिबद्धा' – किसी अनजान नाव से जुड़ी नाव में छिपा शत्रु-प्रवेश का खतरा। 'आतुराम्' – जीर्ण/अस्थिर नाव 'प्रमाद' का प्रतीक है – यह 'अप्रमाद-योग' (सावधानी-नियम) का अंग है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'जल-सुरक्षा' – बिना सर्टिफाइड-कप्तान (नाविक), तूफ़ान-चेतावनी, एवं अस्थिर/अनधिकृत-पोत पर सवारी करना VIP सुरक्षा-नियमों के विपरीत है – यह 'मैरीटाइम सिक्योरिटी' (समुद्री-सुरक्षा) का प्राचीन सूत्र है।

श्लोक ३४ (ग्रीष्म-जल-विहार में सुरक्षा)

श्लोक

परितापिषु वासरेषु पश्यंस्
तटलेखास्थितम् आप्तसैन्यचक्रम् ।
सुविशोधितमीननक्रजालं
व्यवगाहेत जलं सुहृत्समेतः ॥३४॥

IAST

Paritāpiṣu vāsareṣu paśyaṃs
taṭalekhāsthitam āptasainyacakram |
Suviśodhitamīnanakrajālaṃ
vyavagāheta jalaṃ suhṛtsametaḥ ||34||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
परितापिषु	अत्यधिक गर्मी (ग्रीष्म) के
वासरेषु	दिनों में
पश्यन्	देखता हुआ
तटलेखास्थितम्	तट-रेखा (किनारे) पर स्थित
आप्तसैन्यचक्रम्	विश्वसनीय सेना-दल
सुविशोधित	अच्छी तरह निर्मल/स्वच्छ किया हुआ
मीननक्रजालम्	(जिसमें) मछलियों/मगरमच्छों का झुण्ड हटा दिया गया हो
व्यवगाहेत	(जल में) प्रवेश/स्नान करे
सुहृत्समेतः	मित्रों/विश्वस्तों के साथ

भावार्थ

ग्रीष्म-दिनों में राजा जब जल-विहार/स्नान करना चाहे, तो पहले यह देख ले कि विश्वसनीय सेना तट-रेखा पर सुरक्षा-व्यवस्था में तैनात है, तथा जल को मगरमच्छ एवं मछलियों से मुक्त/शुद्ध कर लिया गया हो, तभी विश्वस्त-साथियों के साथ जल में प्रवेश करे। जल-क्रीड़ा में भी सुरक्षा-प्रोटोकॉल अनिवार्य है।

दार्शनिक विवेचन

'आप्तसैन्यचक्रम्' – विश्वस्त-सेना की उपस्थिति मानसिक-आश्वस्ति के लिए आवश्यक है। 'सुविशोधितमीननक्रजालम्' – जलचर-शत्रुओं (नक्र/मगरमच्छ) एवं छिपे-खतरों को हटाना – यह 'जल-क्षेत्र-नियंत्रण' का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP जल-क्रीड़ा' (बीच/पूल) में 'लाइफगार्ड्स' एवं 'मरीन-पेट्रोल' तैनात रहते हैं, तथा जल-क्षेत्र को 'शार्क-नेट' या 'पूल-नेट' से सुरक्षित किया जाता है – यही 'जलीय-सुरक्षा-प्रोटोकॉल' है।

श्लोक ३५ (उद्यान-विहार एवं विषय-राग-त्याग)

श्लोक

गहनानि विवर्जयन् विशुद्धं
बहिरुद्यानवनं समभ्युपेतः ।
विहरन् मधुरं वयोऽनुरूपं
न च माद्येद् विषयोपभोगरागात् ॥३५॥

IAST

Gahanāni vivarjayan viśuddhaṃ
bahirudyānavanaṃ samabhyupetaḥ |
Viharan madhuraṃ vayo'nurūpaṃ
na ca mādyed viṣayopabhogarāgāt ||35||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
गहनानि	घने/अंधेरे वन/स्थान
विवर्जयन्	त्याग करता हुआ
विशुद्धम्	स्वच्छ/निर्मल
बहिरुद्यानवनम्	बाहरी उद्यान/वन
समभ्युपेतः	जाकर / प्राप्त कर
विहरन्	विहार/भ्रमण करता हुआ
मधुरम्	मधुर/सुखद/उचित
वयोऽनुरूपम्	आयु के अनुसार
न माद्येत्	मदोन्मत्त/लिप्त न हो
विषयोपभोगरागात्	विषय-भोगों के राग/आसक्ति से

भावार्थ

राजा घने/अंधेरे स्थानों से बचते हुए, किसी स्वच्छ बाहरी उद्यान/वन में जाकर आयु-अनुकूल मधुर/उचित विहार करे, परन्तु विषय-भोगों के राग/आसक्ति से कभी मदोन्मत्त/प्रमादी न हो। भोग सावधानी-पूर्वक, आसक्ति-रहित होने चाहिए।

दार्शनिक विवेचन

'गहनानि विवर्जयन्' – छिपे-शत्रुओं (षड्यन्त्र) के लिए घने-स्थान आदर्श हैं – अतः उन्हें त्यागें। 'वयोऽनुरूपम्' – आयु के अनुसार उचित-भोग – यह 'आश्रम-व्यवस्था' का सिद्धान्त है। 'न माद्येत्' – गीता का 'वीतराग' (आसक्ति-रहित) ही यहाँ प्रतिबिम्बित है – भोग में भी 'संयम' आवश्यक है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP रिट्रीट' – सुरक्षित-उद्यान में विहार, परन्तु 'अत्यधिक-लक्जरी' (विषय-राग) में डूबना (न माद्येत्) सुरक्षा-चूक का कारण बनता है – यही 'माइंडफुल लीजर' (सचेत-विश्राम) का सिद्धान्त है।

श्लोक ३६ (मृगया/शिकार-यात्रा में सावधानी)

श्लोक

सुविनीतसुवेगपृष्ठयानः
सुखगम्याम् उचितां च लक्ष्यसिद्ध्यै ।
सुपरीक्षितरक्षितान्तसीमां
लघुकोष्ठस् तु मृगाटवीम् उपेयात् ॥३६॥

IAST

Suvinītasuvega pṛṣṭhayānaḥ
sukhagamyām ucitāṃ ca lakṣyasiddhyai |
Suparīkṣitarakṣitāntasīmāṃ
laghukoṣṭhas tu mṛgāṭavīm upeyāt ||36||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
सुविनीत	अच्छी तरह प्रशिक्षित
सुवेग	अच्छी गति वाला
पृष्ठयानः	पीठ पर चढ़ने वाला (घोड़ा)
सुखगम्याम्	सुगम/आरामदायक मार्ग वाली

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
उचिताम्	उचित/योग्य (वन)
लक्ष्यसिद्ध्यै	लक्ष्य-प्राप्ति (शिकार-सिद्धि) हेतु
सुपरीक्षित	अच्छी तरह जाँची गई
रक्षितान्तसीमाम्	रक्षित सीमाओं/घेरे वाली
लघुकोष्ठः	हल्का-सामान (थैला/अस्त्र-शस्त्र) लेकर
मृगाटवीम्	मृग-वन (शिकार-स्थल) को
उपेयात्	(सावधानीपूर्वक) जाए

भावार्थ

राजा जब शिकार-वन में जाए, तो (१) अच्छी तरह प्रशिक्षित एवं तीव्र-गति वाला घोड़ा ले, (२) सुगम-मार्ग एवं उचित-वन का चयन करे, (३) शिकार-सिद्धि के लिए, (४) वन की सीमाएँ पहले से परीक्षित-रक्षित हों, तथा (५) हल्का सामान/अस्त्र लेकर जाए – अत्यधिक-बोझ से गति-बाधा होती है। शिकार-यात्रा में भी आत्म-सुरक्षा प्रधान है।

दार्शनिक विवेचन

'सुविनीतसुवेगपृष्ठयानः' – घोड़ा/वाहन शिकार-सफलता एवं पलायन-क्षमता (Escape velocity) दोनों के लिए आवश्यक है। 'सुपरीक्षितरक्षितान्तसीमाम्' – सीमा-जाँच एवं सेना-घेरा – यह 'क्षेत्र-नियंत्रण' (Territorial dominance) है। 'लघुकोष्ठः' – 'कम-सामान, अधिक-गतिशीलता' – यह 'सैन्य-चपलता' (Agile warfare) का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP शिकार-ट्रिप' (जहाँ अनुमति हो) में – 'आर्मर्ड व्हीकल' (सुविनीत), 'रूट-रैकी' (सुखगम्य), 'सिक्योरिटी कॉर्डन' (रक्षितान्तसीमा), एवं 'मिनिमल लगेज' (लघुकोष्ठः) – ये सभी आधुनिक 'मूवमेंट-सिक्योरिटी' (गतिशील-सुरक्षा) के अंग हैं।

श्लोक ३७ (भवन-प्रवेश-पूर्व शोधन एवं सशस्त्र-परिचारक)

श्लोक

कारयेद् भवनशोधनम् आदौ
मातुर् अन्तिकम् अपि प्रविविक्षुः ।
आप्तशस्त्र्यनुगतः प्रविशेत् तत्-
सङ्कटे च गहने न च तिष्ठेत् ॥३७॥

IAST

Kārayed bhavanaśodhanam ādau
mātur antikam api praviviksuḥ |
Āptaśastrānugataḥ praviśet tat-
saṅkaṭe ca gahane na ca tiṣṭhet ||37||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
कारयेत्	(किसी को) करवाए
भवनशोधनम्	भवन/स्थान की शुद्धि/सफाई/निरीक्षण
आदौ	सर्वप्रथम
मातुः	माता का
अन्तिकम्	निकट/समीप
प्रविविक्षुः	प्रवेश करने की इच्छा रखने वाला
आप्तशस्त्र्यनुगतः	विश्वसनीय शस्त्रधारी/अंगरक्षकों से घिरा हुआ
प्रविशेत्	(तभी) प्रवेश करे
संकटे	संकट-युक्त/भीड़-भरी जगह
गहने	गुप्त/अंधेरे/एकान्त स्थान
न तिष्ठेत्	न रुके/न खड़ा रहे

भावार्थ
राजा को किसी भी स्थान (चाहे वह स्वयं की माता का निकट-स्थान ही क्यों न हो) में प्रवेश करने से पहले पहले उस भवन का शुद्धि-निरीक्षण करवाना चाहिए। तत्पश्चात, विश्वस्त-शस्त्रधारी सुरक्षाकर्मियों से घिरा हुआ ही प्रवेश करे। इसके अतिरिक्त, वह संकट-स्थल या गुप्त/अंधेरे स्थानों पर कभी न रुके। रक्त-सम्बन्ध में भी आत्मरक्षा-प्रोटोकॉल की अवहेलना न करें।

दार्शनिक विवेचन

'मातुरन्तिकमपि' – निकटतम रिश्तेदार (माता) के स्थान में भी विश्वासघात की संभावना को नज़रअंदाज़ न करें – यह 'परम-सतर्कता' है। 'भवनशोधनम्' – स्थान को दुर्गन्ध/विष/छिपे-शत्रु से मुक्त करना – यह 'संस्कार-शुद्धि' का भौतिक रूप है। 'गहने न तिष्ठेत्' – एकान्त/अंधेरा स्थान आक्रमण के लिए आदर्श है – अतः वहाँ न रुकें।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सिक्योरिटी प्रोटोकॉल' में – निकटतम परिवार (माता/पत्नी) के घर जाने पर भी 'एडवांस सिक्योरिटी लिज़न' (ASL) द्वारा स्थान-निरीक्षण, 'क्लोज प्रोटेक्शन टीम' से घिरकर प्रवेश, एवं अंधेरे/संकरे क्षेत्रों में न रुकना – यही मानक-प्रक्रिया (SOP) है।

श्लोक ३८ (प्रतिकूल-मौसम/प्रकाश में यात्रा-निषेध)

श्लोक

पांसूत्करोत्कर्षिणि वाति वाते
संसक्तधाराजलदे च काले ।
अत्यातपे वापि तथान्धकारे
स्वस्थस् तु सन् न क्वचिद् अभ्युपेयात् ॥३८॥

IAST

Pāṃsūtkarotkarṣiṇi vāti vāte
saṃsaktadhārājalade ca kāle |
Atyātape vāpi tathāndhakāre
svasthas tu san na kvacid abhyupeyāt ||38||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
पांसूत्कर	धूल के ढेर
उत्कर्षिणि	उड़ाने वाली (हवा)
वाति	(जब) बहती है
वाते	हवा में
संसक्तधारा	लगातार धारा वाले
जलदे	बादलों/वर्षा में

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
काले	समय पर
अत्यातपे	अत्यधिक धूप में
अन्धकारे	अंधेरे में
स्वस्थः	स्वस्थ/सावधान
न अभ्युपेयात्	(बाहर) न जाए

भावार्थ

राजा को चार प्रतिकूल-परिस्थितियों में बाहर नहीं निकलना चाहिए – (१) तेज हवा से धूल उड़ने पर, (२) लगातार वर्षा/बादल-घिरे समय, (३) अत्यधिक धूप, तथा (४) अंधकार/रात में। इन चारों अवस्थाओं में चाहे वह स्वस्थ/सावधान भी हो, फिर भी बाहर जाना सुरक्षा-दृष्टि से वर्जित है – ये समय शत्रु-आक्रमण के लिए आदर्श होते हैं।

दार्शनिक विवेचन

ये चार 'प्राकृत-विपत्ति-काल' हैं – धूल-तूफान, मूसलाधार-वर्षा, भीषण-धूप, घोर-अंधकार – इनमें दृश्यता कम होती है, शस्त्र-संचालन कठिन होता है, एवं गुप्त-आक्रमण का खतरा अधिकतम होता है। यह 'काल-विवेक' (Time-discretion) का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP मूवमेंट' – चक्रवात/धूल-तूफान, भारी-वर्षा, अत्यधिक-ताप (हीटवेव), एवं रात्रि (अंधकार) में गाड़ी-निकासी स्थगित कर दी जाती है – क्योंकि इन परिस्थितियों में 'ड्रोन/हमला' एवं 'दुर्घटना' का जोखिम बहुत बढ़ जाता है।

श्लोक ३९ (राज-मार्ग से गमन एवं जन-निष्कासन)

श्लोक

निर्गमे च प्रवेशे च राजमार्गं समन्ततः ।
प्रोत्सारितजनं गच्छेत् सम्यगाविष्कृतोन्नतिः ॥३९॥

IAST

Nirgame ca praveśe ca rājamārgaṃ samantataḥ |
Protsāritajanaṃ gacchet samyagāviṣkṛtonnatiḥ ||39||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
निर्गमे	बाहर निकलते समय
प्रवेशे	वापस प्रवेश करते समय
राजमार्गम्	राज-मार्ग (मुख्य/विस्तृत मार्ग)
समन्ततः	चारों ओर/सम्पूर्ण
प्रोत्सारितजनम्	लोगों को हटाकर / भीड़-निष्कासन करके
गच्छेत्	(राजा) यात्रा करे
सम्यक्	उचित रूप से
आविष्कृतोन्नतिः	प्रकट की हुई उन्नति/राज-गरिमा के साथ

भावार्थ

राजा को महल से निकलते तथा वापस प्रवेश करते समय, चारों ओर से लोगों को हटाकर राज-मार्ग से ही यात्रा करनी चाहिए, तथा वह अपनी राज-गरिमा को समुचित रूप से प्रदर्शित करते हुए (खुलेआम) जाए। गुप्त-मार्ग से न जाकर, भीड़-नियंत्रण के साथ मुख्य-मार्ग से शासकीय-गरिमा-सहित गमन करें।

दार्शनिक विवेचन

'राजमार्गं' – प्रमुख-मार्ग से गमन, गुप्त-मार्ग नहीं – क्योंकि राजमार्ग पर सुरक्षा-व्यवस्था (गश्त/प्रहरी) होती है, जनता देखती है (दृश्यता-अधिकता) जिससे छिपा-हमला कठिन होता है। 'प्रोत्सारितजनम्' – भीड़-नियंत्रण दुर्घटना/हमले को रोकता है। 'आविष्कृतोन्नतिः' – राजा को अपनी गरिमा छिपाने की अपेक्षा राज-वेश-गरिमा के साथ चलना चाहिए – इससे शत्रु-भय उत्पन्न होता है एवं प्रजा-विश्वास बढ़ता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP काफिला' – हमेशा 'प्रोटोकॉल रूट' (मुख्य-मार्ग) से चलता है, 'क्राउड कंट्रोल' करके, एवं 'फ्लैग-कार/सायरन' (आविष्कृतोन्नतिः) के साथ – ताकि छिपे-हमलावरों को स्पष्ट-दृश्यता मिले तथा 'जनता' को रास्ता मिल सके। यही 'डिटरेंस' (निवारण) एवं 'विजिबिलिटी' (दृश्यता-सुरक्षा) है।

श्लोक ४० (उत्सव-यात्रा-समाज-भीड़-प्रवेश-निषेध)

श्लोक

यात्रोत्सवसमाजेषु जनसंबाधशालिनः ।
प्रदेशान् नावगाहेत नातिवेलं च संपतेत् ॥४०॥

IAST

Yārotsavasamājeṣu janasaṃbādhaśālinaḥ |
Pradeśān nāvagāheta nātivelaṃ ca sampatet ||40||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
यात्रा	धार्मिक-यात्रा/जुलूस
उत्सव	उत्सव/त्यौहार
समाजेषु	सभाओं/मेलों में
जनसंबाधशालिनः	जन-भीड़ वाले
प्रदेशान्	स्थानों/क्षेत्रों में
न अवगाहेत	प्रवेश न करे
न अतिवेलम्	अत्यधिक वेग/जल्दी/उतावला न करे
संपतेत्	(वहाँ) दौड़कर/घुसकर न जाए

भावार्थ

राजा को (१) यात्रा (धार्मिक-जुलूस), (२) उत्सव, तथा (३) समाज (सभा/मेला) – इन तीनों प्रकार के अत्यधिक जन-भीड़ वाले स्थानों पर कभी प्रवेश नहीं करना चाहिए, तथा वहाँ अत्यधिक वेग/उतावलेपन के साथ नहीं पहुँचना चाहिए। भीड़-नियंत्रण-रहित स्थान हमले का आदर्श-केन्द्र है, अतः राजा को उनसे दूर रहना चाहिए।

दार्शनिक विवेचन

'यात्रोत्सवसमाजेषु' – ये तीनों स्थान भावनात्मक-उत्तेजना, ध्वनि-प्रदूषण एवं दृश्य-अवरोध (भीड़) वाले होते हैं; इनमें 'छिपा-शत्रु' आसानी से 'विष-प्रयोग' या 'शस्त्र-आक्रमण' कर सकता है। 'नातिवेलं' – अत्यधिक-उत्साह (जल्दी) नियंत्रण-हानि का कारण है – यह 'प्रमाद' है। यह 'आत्म-संरक्षण-नीति' (Self-preservation policy) का अन्तिम सूत्र है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP सुरक्षा' – किसी भी राष्ट्राध्यक्ष को 'कुंभ-मेला', 'बड़ा-त्यौहार' (उत्सव), या 'राजनीतिक-रैली' (समाज) के अत्यधिक-भीड़ वाले क्षेत्रों में प्रवेश करने से सख्ती से रोका जाता है; यदि आवश्यक भी हो, तो अत्यधिक-योजना एवं 'स्नाइपर-डीकॉय' आदि से पहुंचते हैं, किन्तु 'अतिवेल' (उतावला) नहीं होते। यही 'क्राउड-सिक्योरिटी' एवं 'इवेंट-सिक्योरिटी' का सार है।

श्लोक ४१ (अन्तःपुर-प्रवेश-व्यवस्था)

श्लोक

निषेवितो वर्षवरैः कञ्चुकोष्णीषधारिभिः ।
अन्तःपुरेषु विचरेत् कुब्जकैरातवामनैः ॥४१॥

IAST

Niṣevito varṣavaraiḥ kañcukoṣṇīṣadhāribhiḥ |
Antaḥpureṣu vicaret kubjakairātavāmanaiḥ ||41||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
निषेवितः	सेवित / घिरा हुआ
वर्षवरैः	प्रमुख रक्षकों द्वारा
कञ्चुक	कवच/बख्तर
उष्णीष	पगड़ी/सिर-रक्षा
धारिभिः	धारण करने वालों द्वारा
अन्तःपुरेषु	अन्तःपुर (राजमहल) में
विचरेत्	विचरण करे
कुब्जकैः	कुब्ज (कुबड़े) सेवकों के साथ
आतवामनैः	आत (अतिवृद्ध?) एवं वामन (बौने) सेवकों के साथ

भावार्थ

राजा को सदा कवच-पगड़ी धारण करने वाले प्रमुख रक्षकों से घिरा हुआ रहना चाहिए तथा अन्तःपुर (महल के भीतरी भाग) में कुब्ज (कुबड़े), बौने (वामन) एवं विशिष्ट सेवकों के साथ ही विचरण करना चाहिए। विकृतांग सेवक अधिक विश्वसनीय माने जाते थे।

दार्शनिक विवेचन

'कुब्जकैरातवामनैः' – ये शारीरिक रूप से विकृत व्यक्ति प्रायः राज-षड्यन्त्रों से दूर रहते थे एवं राजा पर अधिक आश्रित होते थे, अतः विश्वसनीय। यह 'रक्षा-व्यूह-रचना' (Security entourage) का सिद्धान्त है – राजा को किसी भी अजनबी या अप्रमाणित व्यक्ति से दूर रखना।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'अंगरक्षक-दल' (Close Protection Team) में भी विशेष रूप से प्रशिक्षित सदस्यों (बख़्तरदार/गुप्तचर) का घेरा होता है। 'विकृतांगों' का आधुनिक समानान्तर 'स्नाइपर-दल' या 'छद्म-कर्मी' हो सकता है, जो सामान्य दिखकर सुरक्षा प्रदान करते हैं।

श्लोक ४२ (अन्तःपुर-अमात्यों के लिए नियम)

श्लोक

नीचैर् अन्तःपुरामात्याः शुचयश् चित्तवेदिनः ।
शस्त्राग्निविषवर्जं हि नर्मयेयुर् महीपतिम् ॥४२॥

IAST

Nīcair antaḥpurāmātyāḥ śucayaś cittavedinaḥ |
Śastrāgniviṣavarjaṃ hi narmayeyur mahīpatim ||42||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
नीचैः	विनम्र/संयत होकर
अन्तःपुरामात्याः	अन्तःपुर के मंत्री/अधिकारी
शुचयः	शुद्ध/ईमानदार
चित्तवेदिनः	चित्त/मन की बात जानने वाले
शस्त्र	हथियार

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अग्नि	आग
विष	जहर
वर्जम्	रहित
नर्मयेयुः	नर्म/मनोरंजन/हास-परिहास करें
महीपतिम्	राजा का

भावार्थ
अन्तःपुर के अमात्य (मंत्री/प्रशासक) विनम्रता से, पवित्र/ईमानदार होकर तथा राजा के मनोभावों को जानने वाले बनें। वे राजा का मनोरंजन (नर्म) केवल शस्त्र, अग्नि एवं विष – इन तीनों से रहित होकर करें। अर्थात् राजा के समीप आते समय कोई भी घातक वस्तु न लाएँ।

दार्शनिक विवेचन

'शस्त्राग्निविषवर्जम्' – ये तीनों राज-हत्या के प्रमुख साधन हैं। अन्तःपुर-अमात्यों का 'नर्म' (विनोद/मर्म-वार्ता) केवल बुद्धि एवं वाणी द्वारा हो, शारीरिक/रासायनिक-हथियारों से नहीं – यह 'अहिंसक-संवाद' (Non-violent interaction) का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'सुरक्षा-प्रोटोकॉल' – किसी भी VIP के समीप आने वाले 'सलाहकार/स्टाफ' को मेटल-डिटेक्टर एवं बैग-स्क्रीनिंग से गुज़रना पड़ता है। इस श्लोक का आधुनिक रूप आज 'नो-वेपन-ज़ोन' (शस्त्र-निषेध-क्षेत्र) कहलाता है।

श्लोक ४३ (अन्तर्वंशिक-सेना द्वारा रक्षा)

श्लोक

अन्तर्वंशिकसैन्यं हि सन्नद्धं साधुसम्मतम् ।
रक्षेद् आयुक्तकुशलम् अन्तःपुरगतं नृपम् ॥४३॥

IAST

Antarvaṃśikasainyaṃ hi sannaddhaṃ sādhusammatam |
Rakṣed āyuktakuśalam antaḥpuragataṃ nṛpam ||43||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अन्तर्वंशिक	वंशपरम्परागत/पारिवारिक (सेना)
सन्नद्धम्	सुसज्जित/सशस्त्र
साधुसम्मतम्	सज्जनों/विद्वानों द्वारा प्रशंसित
रक्षेत्	रक्षा करे
आयुक्तकुशलम्	आयुक्त (नियुक्त) कुशल (दक्ष) रक्षक
अन्तःपुरगतम्	अन्तःपुर में स्थित
नृपम्	राजा की

भावार्थ

वंश-परम्परागत सेना, जो सुसज्जित एवं सज्जनों द्वारा प्रशंसित हो, तथा जो कुशल एवं नियुक्त सैनिक हों, वे अन्तःपुर में स्थित राजा की रक्षा करें। पीढ़ी-दर-पीढ़ी सेवारत सैनिक बाहरी भाड़े-के-सैनिकों से अधिक विश्वसनीय होते हैं।

दार्शनिक विवेचन

'अन्तर्वंशिक' – पारिवारिक-निष्ठा (Family loyalty) बाहरी-भाड़े-सैनिकों (mercenaries) से उच्चतर होती है। यह 'परम्परागत-विश्वास' (Traditional trust) का सिद्धान्त है – जो पीढ़ियों से सेवारत है, वह राज-परिवार के प्रति अधिक समर्पित होता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'राष्ट्रपति-रक्षक-दल' (Presidential Guards) प्रायः विशेष भर्ती-प्रक्रिया एवं वंशानुगत/दीर्घ-सेवा-आधारित होते हैं (US Secret Service, UK Royal Guard) – जिनकी निष्ठा एवं अनुभव सिद्ध होता है।

श्लोक ४४ (स्वच्छता-निरीक्षण-दल)

श्लोक

आशीतिकाश् च पुरुषाः पञ्चाशत्काश् च योषितः ।
पश्येयुर् अवरोधानां शौचम् आगारिकाश् च ये ॥४४॥

IAST

Āśītikāś ca puruṣāḥ pañcāśatkāś ca yoṣitaḥ |
Paśyeyur avarodhānāṃ śaucam āgārikāś ca ye ||44||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
आशीतिकाः	अस्सी (८०)
पुरुषाः	पुरुष
पञ्चाशत्काः	पचास (५०)
योषितः	स्त्रियाँ
पश्येयुः	निरीक्षण/देखें
अवरोधानाम्	अन्तःपुर-स्त्रियों/रानियों का
शौचम्	स्वच्छता/शुद्धता
आगारिकाः	आगारिक (भवन-प्रबंधक/रसोइया)
ये	जो (भी)

भावार्थ

अस्सी पुरुष, पचास स्त्रियाँ, तथा जो आगारिक (भवन-प्रबंधक एवं रसोइया) हैं – ये सभी अवरोध (अन्तःपुर-वासिनी स्त्रियों) के शौच (स्वच्छता/भोजन-शुद्धि) का निरीक्षण करें। संख्या-बहुल निरीक्षण-दल भ्रष्टाचार/छल को रोकता है।

दार्शनिक विवेचन

'आशीतिकाः... पञ्चाशत्काः' – यह 'विविध-निरीक्षण-समूह' (Diverse inspection team) सिद्धान्त है – अनेक दृष्टियाँ (चूंकि पुरुष/स्त्री अलग-अलग कोणों से देखते हैं) छिपे-दोष को उजागर करती हैं। 'शौच' (स्वच्छता) विष-प्रयोग का प्रथम-निवारण है – यह 'स्वास्थ्य-सुरक्षा' (Sanitation security) है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP रसोई' में 'फूड-टेस्टिंग टीम' (आगारिक), 'हाइजीन-इंस्पेक्टर' एवं 'स्टाफ-स्क्रीनिंग' की बहुस्तरीय व्यवस्था होती है – यही श्लोक-वर्णित 'नेत्र-गण' (निरीक्षण-दल) का आधुनिक रूप है।

श्लोक ४५ (रूपाजीवा-स्त्रियों का प्रवेश)

श्लोक

रूपाजीवाः स्त्रियः स्नाताः परिवर्तितवाससः ।
राजानम् उपतिष्ठेयुर् विशुद्धस्रग्विभूषणाः ॥४५॥

IAST

Rūpājīvāḥ striyaḥ snātāḥ parivartitavāsasaḥ |
Rājānam upatiṣṭheyur viśuddhasragvibhūṣaṇāḥ ||45||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
रूपाजीवाः	रूप-जीवा (सुन्दर/नर्तकी/सेविका)
स्नाताः	स्नान किए हुए
परिवर्तितवाससः	बदले हुए (नए) वस्त्र पहने
राजानम्	राजा को
उपतिष्ठेयुः	सेवा/उपस्थित हों
विशुद्ध	अत्यन्त शुद्ध/स्वच्छ
स्रक्	माला
विभूषणाः	आभूषण (सहित)

भावार्थ

रूपाजीवा (सुन्दरियाँ/दासियाँ/नर्तकियाँ) स्नान करके, वस्त्र-परिवर्तन (नए कपड़े) करके, तथा विशुद्ध-माला-आभूषण धारण करके ही राजा की सेवा करें। वस्त्र-परिवर्तन एवं स्नान का उद्देश्य है कि कोई भी विष-लेपित/छिपा हुआ आभूषण या वस्त्र राजा के सम्पर्क में न आए।

दार्शनिक विवेचन

'स्नाताः परिवर्तितवाससः' – यह 'भौतिक-शुद्धि' एवं 'छल-निवारण' (Deception prevention) दोनों है – नए वस्त्र सुनिश्चित करते हैं कि वस्त्रों में विष-लेप/शस्त्र-छिपाव न हो। 'रूपाजीवाः' – सौन्दर्य एवं कला का प्रयोग आकर्षण हेतु, किन्तु सुरक्षा-शुद्धि अनिवार्य है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'सुरक्षा-प्रोटोकॉल' – किसी भी VIP से मिलने वाले व्यक्ति (विशेषतः कलाकार/अतिथि) को 'सुरक्षा-जाँच' (मेटल-डिटेक्टर, सामान-स्क्रीनिंग) से गुजरना पड़ता है। 'वस्त्र-परिवर्तन' का आधुनिक समानान्तर 'प्रोटोकॉल-ड्रेस' एवं 'निषिद्ध-वस्तु-जाँच' है।

श्लोक ४६ (अन्तःपुर-जन का बाह्य-संसर्ग-निषेध)

श्लोक

कुहकैर् जटिलैश् चापि मुण्डैश् चाभ्यन्तरो जनः ।
संसर्गं न क्वचिद् गच्छेद् बाह्यैर् दासीजनैस् तथा ॥४६॥

IAST

Kuhakair jaṭilaiś cāpi muṇḍaiś cābhyantaro janaḥ |
Saṃsargaṃ na kvacid gacched bāhyair dāsījanais tathā ||46||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
कुहकैः	मायावी/जादूगर/धूर्तों से
जटिलैः	जटाधारी (साधु/तपस्वी) से
मुण्डैः	मुंडित/मुड़े हुए (भिक्षु/बौद्ध) से
अभ्यन्तरः	अन्तःपुर-स्थित
जनः	कर्मचारी/सेवक
संसर्गम्	मेल-जोल/सम्पर्क
न गच्छेत्	न करे

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
बाह्यैः	बाहरी
दासीजनैः	दासियों/सेविकाओं से

भावार्थ

अन्तःपुर-स्थित सेवक-जन को कुहक (मायावी/जादूगर), जटिल (साधु/तपस्वी), मुण्ड (मुंडित भिक्षु/बौद्ध), तथा बाहरी दासी-जनों से कहीं भी किसी भी प्रकार का संसर्ग (मेल-जोल/बातचीत) नहीं करना चाहिए। ये सभी बाहरी तत्त्व जासूसी/विष-प्रयोग के माध्यम हो सकते हैं।

दार्शनिक विवेचन

'कुहक-जटिल-मुण्ड' – ये भिन्न-वेशधारी (संन्यासी, योगी, भिक्षु) प्रायः राज-दरबारों में गुप्त-संदेश-वाहक/जासूस होते थे। 'अभ्यन्तर-जन' का इनसे संसर्ग 'गोपनीयता-भंग' (Breach of confidentiality) का कारण है – यह 'सूचना-सुरक्षा' (Information security) का प्राचीन-सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'गुप्त-सूचना-सुरक्षा' (Intelligence security) में कोर-स्टाफ को बाहरी संदिग्ध-व्यक्तियों (छद्म-पत्रकार, NGO कार्यकर्ता, विदेशी-छात्र) से मिलने-जुलने पर प्रतिबन्ध होता है – यही 'संसर्ग-निषेध' (No-contact rule) है।

श्लोक ४७ (प्रवेश-निर्गम-नियंत्रण एवं चिह्नांकन)

श्लोक

निर्गच्छेत् प्रविशेच् चापि सर्वत्राभ्यन्तरो जनः ।
विज्ञातद्रव्यसञ्चारी करणेनोपलक्षितः ॥४७॥

IAST

Nirgacchet praviśec cāpi sarvatrābhyantaro janaḥ |
Vijñātadravyasañcārī karaṇenopalakṣitaḥ ||47||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
निर्गच्छेत्	बाहर निकले
प्रविशेत्	अन्दर प्रवेश करे
सर्वत्र	सभी जगह

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अभ्यन्तरः	अन्तःपुर-स्थित
जनः	कर्मचारी
विज्ञातद्रव्य	ज्ञात (पहचाने गए) द्रव्य/सामान लेकर
सञ्चारी	चलने/आने-जाने वाला
करणेन	मुद्रा/चिह्न/टोकन द्वारा
उपलक्षितः	चिह्नित/पहचाना गया

भावार्थ

अन्तःपुर का कोई भी कर्मचारी प्रवेश या निर्गम तभी करे, जब वह ज्ञात-द्रव्य (पहचानी-सूचीबद्ध सामान) लेकर जाए/आए, तथा वह मुद्रा/चिह्न/पहचान-पत्र द्वारा चिह्नित हो। हर आने-जाने वाली वस्तु एवं व्यक्ति का लेखा-जोखा आवश्यक है।

दार्शनिक विवेचन

'विज्ञातद्रव्यसञ्चारी' – 'Access Control List' (ACL) – अर्थात् प्रत्येक वस्तु को लॉग किया जाना चाहिए। 'करणेनोपलक्षितः' – मुद्रा/सील (Token/Seal) से पहचान – यह 'बायोमेट्रिक्स' का प्राचीन-रूप है। यह 'शून्य-त्रुटि-सुरक्षा' (Zero-trust security) सिद्धान्त पर आधारित है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'डाटा-सेंटर/अभेद्य-भवन' – स्टाफ को 'बायोमेट्रिक-स्कैन' (करण = RFID/Biometric) तथा सामान-स्क्रीनिंग (विज्ञातद्रव्य) के बाद ही प्रवेश-निर्गम की अनुमति होती है – यही 'भौतिक-एवं-डिजिटल-सुरक्षा' (Physical & Digital Security) है।

श्लोक ४८ (राजा द्वारा अकल्य-अनुजीवी-दर्शन-निषेध)

श्लोक

न चानुजीविनं पश्येद् अकल्यं पृथिवीपतिः ।
अन्यत्रात्ययिकाद् रोगात् सर्वस्यैवातुरो गुरुः ॥४८॥

IAST

Na cānujīvinaṃ paśyed akalyaṃ pṛthivīpatiḥ |
Anyatrātyayikād rogāt sarvasyaivāturo guruḥ ||48||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अनुजीविनम्	आश्रित/सेवक
अकल्यम्	अकल्याण/अशुभ/रोगी/मलिन
पश्येत्	(राजा) देखे
पृथिवीपतिः	राजा
अन्यत्र	सिवाय
आत्ययिकात्	अत्यावश्यक/गम्भीर
रोगात्	रोग (के समय)
सर्वस्य	सब (रोगियों) का
आतुरः	रोगी/पीड़ित
गुरुः	(राजा ही) आश्रय/गुरु/चिकित्सक है

भावार्थ

राजा को अपने किसी भी अनुजीवी (आश्रित/सेवक) को अकल्य (अशुभ/अस्वस्थ/मलिन/रोगग्रस्त) अवस्था में नहीं देखना चाहिए, सिवाय अत्यावश्यक/गम्भीर रोग के। क्योंकि राजा सब रोगियों (प्रजा/सेवक) का गुरु (आश्रयदाता/रक्षक) है, परन्तु वह स्वयं को अशुभ-दर्शन से बचाए। यह 'आत्म-संस्कार-रक्षा' है।

दार्शनिक विवेचन

'अकल्यं पश्येत्' – अशुभ/रोग-दर्शन राजा के मन पर प्रभाव डालता है, जिससे उसका विवेक कुण्ठित होता है। 'गुरुः' – राजा को स्वयं रोग-मुक्त एवं प्रसन्न रहना चाहिए ताकि वह प्रजा-हित कर सके। यह 'मनः-स्वास्थ्य-सुरक्षा' (Mental hygiene) का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP मूवमेंट' – राष्ट्राध्यक्षों के मार्ग से रोगियों, विकलांगों या मलिन-दृश्यों को हटाया जाता है (रूट-क्लियरेंस) – यह 'मानसिक-आघात-निवारण' एवं 'छवि-संरक्षण' (Image preservation) है।

श्लोक ४९ (राजा-रानी का शुद्ध-मिलन-विधान)

श्लोक

स्नातानुलिप्तः सुरभिः स्रग्वी रुचिरभूषणः ।
स्नातां विशुद्धवसनां पश्येद् देवीं सुभूषणाम् ॥४९॥

IAST

Snātānuliptaḥ surabhiḥ sragvī rucirabhūṣaṇaḥ |
Snātāṃ viśuddhavasanāṃ paśyed devīṃ subhūṣaṇām ||49||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
स्नात	स्नान किया हुआ
अनुलिप्तः	लेप (चन्दन/इत्र) लगाये हुए
सुरभिः	सुगन्धित
स्रग्वी	मालाधारी
रुचिर	सुन्दर/मनोहर
भूषणः	आभूषण धारी
स्नाताम्	स्नान किया हुआ (रानी)
विशुद्धवसनाम्	विशुद्ध/स्वच्छ वस्त्र वाली
पश्येत्	मिलन/दर्शन करे
देवीम्	रानी को
सुभूषणाम्	सुन्दर-आभूषण वाली

भावार्थ

राजा स्वयं स्नात, सुगन्धित-लेपित, मालाधारी एवं मनोहर-आभूषणों से युक्त होकर, तथा उसी प्रकार स्नात, विशुद्ध-वस्त्र एवं सुभूषण-युक्त रानी का दर्शन/मिलन करे। यह 'शारीरिक-शुद्धि' एवं 'पवित्र-सम्बन्ध' का विधान है – आपसी मिलन भी सुरक्षा-प्रोटोकॉल के अधीन है।

दार्शनिक विवेचन

'स्नातानुलिप्तः...' – यह 'ऋतुकाल-संयम' एवं 'शारीरिक-पवित्रता' (Physical sanctity) का प्रतीक है। यह सुनिश्चित करता है कि दोनों पक्ष किसी बाहरी-विष/अशुद्धि से मुक्त हैं – 'वैवाहिक-सुरक्षा' (Conjugal safety) का सिद्धान्त, जो आयुर्वेदिक 'ऋतुचर्या' से सम्बद्ध है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'प्रोटोकॉल' – राजकीय-विवाह/आधिकारिक-कार्यक्रमों में साथ-साथ आने वाले प्रथम-दम्पति (First Couple) को विशेष 'स्टाइल-ड्रेस-कोड' एवं 'सुरक्षा-स्क्रीनिंग' से गुज़रना पड़ता है – यही 'औपचारिक-शुद्धि' (Formal purity) का आधुनिक-संस्करण है।

श्लोक ५० (स्त्री-संग में अति-विश्वास-निषेध – समापन)

श्लोक

न च देवीगृहं गच्छेद् आत्मीयात् सन्निवेशनात् ।
अत्यन्तं वल्लभोऽस्मीति विस्रम्भं स्त्रीषु न व्रजेत् ॥५०॥

IAST

Na ca devīgṛhaṃ gacched ātmīyāt sanniveśanāt |
Atyantaṃ vallabho'smīti visrambhaṃ strīṣu na vrajet ||50||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
देवीगृहम्	रानी-भवन
गच्छेत्	जाए
आत्मीयात्	अपने (निजी-निवास) से
सन्निवेशनात्	स्थान/निवास से
अत्यन्तम्	अत्यधिक
वल्लभः	प्रियतम/प्यारा
अस्मि	(मैं) हूँ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
इति	ऐसा (सोचकर)
विस्रम्भम्	अत्यधिक-विश्वास
स्त्रीषु	स्त्रियों (रानी/दासियों) पर
व्रजेत्	(न) करे

भावार्थ
राजा को अपने निजी-निवास से रानी-भवन में बार-बार/बिनाकारण नहीं जाना चाहिए। साथ ही, 'मैं अत्यन्त प्रिय हूँ' – ऐसा विचार करके स्त्रियों (रानियों/सेविकाओं) पर अत्यधिक विश्वास न करे। **यही स्त्री-संग-सुरक्षा का अन्तिम सूत्र है – अति-विश्वास राजा का विनाश है।**

दार्शनिक विवेचन

यह सम्पूर्ण 'आत्मरक्षणप्रकरणम्' का **महानिष्कर्ष** है – 'विस्रम्भ' (अति-विश्वास) ही 'प्रमाद' (लापरवाही) का कारण है। स्त्रियाँ (यहाँ अन्तःपुर-वासिनी) भी राजनीति/षड्यन्त्र में वाहक बन सकती हैं, चाहे वे कितनी भी प्रिय क्यों न हों। 'देवीगृहं न गच्छेत्' – स्थान-सीमा (भौगोलिक-दूरी) भी सुरक्षा-बढ़ाती है – 'पहुँच-नियंत्रण' (Access control) का परम-सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'राष्ट्रप्रमुख-सुरक्षा' में 'फैमिली-मेम्बर्स' को भी 'सुरक्षा-प्रोटोकॉल' (जैसे कोई भी बिना सूचना के पति/पत्नी के कक्ष में न जाए) में बाँधा जाता है, क्योंकि 'इनसाइडर-थ्रेट' (आन्तरिक-खतरा) सबसे घातक होता है। 'स्त्रीषु विस्रम्भः' – आधुनिक 'जासूसी-कहानियाँ' (जैसे सेडक्शन-स्पाइज) इसी प्राचीन-सत्य को प्रमाणित करती हैं कि **भावनात्मक-लगाव सुरक्षा-चूक का सबसे बड़ा द्वार है।**

श्लोक ५१ (ऐतिहासिक-उदाहरण – राज-हत्या के प्रकार)

श्लोक

देवीगृहं गतो भ्राता भद्रसेनम् अमारयत् ।
मातुः शय्यान्तरालीनः कारूशं चौरसः सुतः ॥५१॥

IAST

Devīgṛhaṃ gato bhrātā bhadrasenam amārayat |
Mātuḥ śayyāntarālīnaḥ kārūśam caurasaḥ sutaḥ ||51||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
देवीगृहम्	रानी-भवन
गतः	गया हुआ
भ्राता	(राजा का) भाई
भद्रसेनम्	भद्रसेन (राजा) को
अमारयत्	मार डाला
मातुः	माता की
शय्या	शय्या/बिस्तर
अन्तरालीनः	बीच में छिपा हुआ
कारूशम्	कारूश (राजा) को
चौरसः	चौर/दुष्ट
सुतः	पुत्र (ने)

भावार्थ

(उदाहरणार्थ) – रानी-भवन में गया हुआ (राजा का) भाई भद्रसेन राजा को मार डाला; तथा माता की शय्या के बीच में छिपा हुआ दुष्ट पुत्र कारूश राजा को मार डाला। ये प्राचीन-घटनाएँ दर्शाती हैं कि **अन्तःपुर एवं निकट-सम्बन्धी ही राज-हत्या के प्रमुख स्रोत हैं।**

दार्शनिक विवेचन

'भ्राता' एवं 'पुत्र' – ये रक्त-सम्बन्धी भी विश्वासघाती हो सकते हैं, विशेषतः राज-सिंहासन-लालसा में। 'मातुः शय्यान्तरालीनः' – अति-निकटता (माता-शय्या) भी सुरक्षा-भंग का माध्यम बन सकती है – यह 'राज-तन्त्र' की आन्तरिक-दुर्बलता का दार्शनिक-प्रतिबिम्ब है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक राजनीति/व्यापार में 'फैमिली-एंटरप्राइज' में उत्तराधिकार-हत्याएँ (रूसी-माफिया, पारिवारिक-कॉर्पोरेट-युद्ध) इसी प्राचीन-सत्य को दोहराती हैं – **रक्त-सम्बन्ध भी सत्ता-लोभ में वधक बन सकता है।**

श्लोक ५२ (विष-मिश्रित-लाजा एवं मधु-प्रलोभन)

श्लोक

लाजान् विषेण संयोज्य मधुनेति विलोभ्य तम् ।
देवी तु काशिराजेन्द्रं निजघान रहोगतम् ॥५२॥

IAST

Lājān viṣeṇa saṃyojya madhuneti vilobhya tam |
Devī tu kāśirājendraṃ nijaghāna rahogatam ||52||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
लाजान्	लाई (भुने हुए चावल)
विषेण	विष से
संयोज्य	मिलाकर
मधुना	शहद
इति	इस प्रकार
विलोभ्य	लोभ देकर/प्रलोभित करके
तम्	उस (राजा) को
देवी	रानी
काशिराजेन्द्रम्	काशिराज (काशी के राजा) को
निजघान	मार डाला
रहोगतम्	एकान्त-स्थान में गये हुए

भावार्थ
विष-मिश्रित लाई को शहद के साथ प्रलोभन-स्वरूप देकर, रानी ने एकान्त-स्थान में गए हुए काशिराज को मार डाला। भोजन-प्रलोभन एवं एकान्त में राजा-वध का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक-उदाहरण।

दार्शनिक विवेचन

'मधुनेति विलोभ्य' – मीठा-भोजन/प्रलोभन 'राग' (आसक्ति) का प्रतीक है। राग ही विवेक-नाश का कारण है – यह योग-दर्शन के 'राग-क्लेश' का व्यावहारिक-रूप है। 'रहोगतम्' – एकान्त स्थान (निजी-कक्ष) में सुरक्षा-चूक – यह 'स्थान-सुरक्षा' (Spatial security) का उल्लंघन है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'विषाक्त-प्रलोभन' (साइबर-फिशिंग, भोजन-में-ड्रग्स) – शत्रु मीठे-प्रलोभन (जैसे मुफ्त-उपहार, स्वादिष्ट-भोजन) से VIP को आकर्षित कर हमला करते हैं। एकान्त-स्थान (निजी-सुइट) में सुरक्षा-घटनाएँ आज भी घटित होती हैं।

श्लोक ५३ (आभूषणों द्वारा विष-प्रयोग)

श्लोक

विषदिग्धेन सौवीरं मेखलामणिना नृपम् ।
नूपुरेण च वैरूप्यं जारुष्यं दर्पणेन च ॥५३॥

IAST

Viṣadigdhena sauvīraṃ mekhalāmaṇinā nṛpam |
Nūpureṇa ca vairūpyaṃ jāruṣyaṃ darpaṇena ca ||53||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विषदिग्धेन	विष-लेपित
सौवीरम्	सौवीर राजा
मेखलामणिना	कमरबंद-मणि (आभूषण) द्वारा
नृपम्	राजा को
नूपुरेण	पायल द्वारा
वैरूप्यम्	वैरूप्य (राजा)

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
जारुष्यम्	जारुष्य (राजा)
दर्पणेन	दर्पण/आईना द्वारा

भावार्थ

(तीन उदाहरण) – (१) विष-लेपित कमरबंद-मणि द्वारा सौवीर राजा, (२) पायल द्वारा वैरूप्य राजा, तथा (३) दर्पण द्वारा जारुष्य राजा – ये तीनों राजा अपने ही आभूषणों/प्रसाधनों द्वारा मारे गए। यह स्पर्श-विष एवं आभूषण-विष का प्राचीन-प्रमाण है।

दार्शनिक विवेचन

'मेखला-नूपुर-दर्पण' – ये तीनों 'अंग-स्पर्शी-सौंदर्य-साधन' हैं, जो निकट-सम्पर्क (Touch) द्वारा विष-प्रवेश का माध्यम बनते हैं। यह 'स्पर्श-तन्मात्रा' (स्पर्श-गुण) के दूषण-सिद्धान्त को दर्शाता है – वैशेषिक-दर्शन में 'स्पर्श' भूत-गुण विष से प्रभावित होता है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'स्पर्श-विष' (जैसे रेडियोधर्मी-लेप, आर्सेनिक-पाउडर) अभी भी 'घातक-प्रसाधन' (जैसे क्रीम/इत्र में मिलाकर) के रूप में प्रयुक्त होते हैं। 'डार्क-वेब' पर 'हत्यारे-इत्र' (Poisoned perfumes) की बिक्री इसी प्राचीन-विधि का आधुनिक-रूप है।

श्लोक ५४ (वेणी/चोटी एवं छत्र/छाते में शस्त्र-छिपाव)

श्लोक

वेण्यां शस्त्रं समाधाय तथा चापि विडूरथम् ।
अहिवृत्तं परिहरेच् छत्रौ चापि प्रयोजयेत् ॥५४॥

IAST

Veṇyāṃ śastraṃ samādhāya tathā cāpi viḍūratham |
Ahivṛttaṃ pariharec chatrau cāpi prayojayet ||54||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
वेण्याम्	चोटी/वेणी (बालों में)
शस्त्रम्	शस्त्र/हथियार

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
समाधाय	रखकर/छिपाकर
विडूरथम्	विडूरथ (राजा)
अहिवृत्तम्	अहिवृत्त (राजा)
परिहरेत्	(उससे) बचाव करे
छत्रौ	छाते/छत्र में
प्रयोजयेत्	(शस्त्र) प्रयोग/छिपाव करे (अर्थात् वहाँ भी खतरा है)

भावार्थ
(राजा को सावधान रहना चाहिए) – वेणी (चोटी) में छिपाया गया शस्त्र, तथा छत्र (छाता) में भी शस्त्र-छिपाव – इनसे विडूरथ एवं अहिवृत्त जैसे राजाओं की हत्या हुई। अतः राजा को ऐसे असामान्य-स्थानों पर भी शस्त्र-संभावना की परीक्षा करनी चाहिए।

दार्शनिक विवेचन

'वेणी' (स्त्री-आभूषण/बाल-विन्यास) एवं 'छत्र' (राज-चिह्न) – ये 'अप्रत्याशित-स्थान' (Unlikely places) हैं, जहाँ शस्त्र-छिपाव दृष्टि-मोह (Illusion) पैदा करता है। यह 'माया-शस्त्र-सिद्धान्त' है – विवेक-रहित राजा इन 'निर्दोष-वस्तुओं' में छिपे घात को नहीं पहचान पाता।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'घातक-छद्म-शस्त्र' – बेल्ट-बकल, पेन-गन, स्मार्टफोन-केस, एवं अम्ब्रेला-गन (छाते में तीर/गोली) – ये सभी 'निर्दोष-वस्तु-छद्म' के आधुनिक-उदाहरण हैं। VIP सुरक्षा में 'निषिद्ध-वस्तु-स्कैनिंग' इन्हीं को पकड़ने के लिए है।

श्लोक ५५ (सुगुप्त-दारा/पत्नी-रक्षा का फल)

श्लोक

यस्य दाराः सुगुप्ताः स्युः पुरुषैर् आप्तकारिभिः ।
सर्वभोगान्वितं तस्य हस्ते लोकद्वयं स्थितम् ॥५५॥

IAST

Yasya dārāḥ suguptāḥ syuḥ puruṣair āptakāribhiḥ |
Sarvabhogānvitaṃ tasya haste lokadvayaṃ sthitam ||55||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
दाराः	पत्नियाँ
सुगुप्ताः	सु-गुप्त / अच्छी तरह रक्षित
आप्तकारिभिः	विश्वसनीय-कार्य करने वालों द्वारा
सर्वभोगान्वितम्	सभी सुख-साधनों से युक्त
तस्य	उस (राजा) के
हस्ते	हाथ में
लोकद्वयं	दोनों लोक (इहलोक एवं परलोक)
स्थितम्	स्थित होते हैं

भावार्थ
जिस राजा की पत्नियाँ (दाराः) विश्वस्त-पुरुषों द्वारा अच्छी तरह रक्षित हों, उसके हाथ में सभी सुख (सर्वभोग) तथा इहलोक-परलोक (लोकद्वयं) – दोनों स्थिर होते हैं। स्त्री-सुरक्षा राजा की सम्पूर्ण-समृद्धि का आधार है।

दार्शनिक विवेचन

'दाराः' – अन्तःपुर-रक्षा ही राजा के मान-सम्मान एवं मानसिक-स्थिरता का मूल है। 'लोकद्वयम्' – इस लोक में प्रतिष्ठा (यश) एवं परलोक में पुण्य-फल (धर्म) – दोनों का मूल पत्नी-रक्षा है। यह 'अर्थ-धर्म-संग्रह' (आर्थिक-एवं-नैतिक-सुरक्षा) का सिद्धान्त है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फैमिली-सिक्योरिटी' – यदि नेता/CEO की पत्नी/परिवार असुरक्षित है, तो उसका ध्यान एवं निर्णय-क्षमता विचलित हो जाती है – जिससे संगठन/राष्ट्र कमजोर होता है। परिवार-सुरक्षा ही नेतृत्व-स्थिरता (Leadership stability) का आधार है।

श्लोक ५६ (धर्मार्थ सर्व-दार-गमन एवं वाजीकरण)

श्लोक

धर्मम् इच्छन् नरपतिः सर्वदारान् अनुक्रमात् ।
गच्छेद् अनुदिनं नित्यं वाजीकरणबृंहितः ॥५६॥

IAST

Dharmam icchan narapatiḥ sarvadārān anukramāt |
Gacched anudinaṃ nityaṃ vājīkaraṇabṛṃhitaḥ ||56||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
धर्मम्	धर्म को
इच्छन्	चाहता हुआ
नरपतिः	राजा
सर्वदारान्	सभी पत्नियों को
अनुक्रमात्	क्रम/पाली से
गच्छेत्	(नियमित) जाए
अनुदिनम्	प्रतिदिन
नित्यम्	नियमित
वाजीकरणबृंहितः	वाजीकरण (बल/वीर्य-वर्धक) से पुष्ट

भावार्थ

राजा यदि धर्म (सन्तानोत्पत्ति एवं पत्नी-धर्म) चाहता है, तो वह सभी पत्नियों के पास क्रम-पाली से, नियमित जाए, तथा वह वाजीकरण (बल-वीर्यवर्धक) औषधियों/साधनों से पुष्ट होकर। यह 'ऋतु-धर्म' एवं 'पत्नी-कर्तव्य-पालन' का विधान है।

दार्शनिक विवेचन

'धर्मम् इच्छन्' – पत्नी-गमन केवल काम-भोग नहीं, अपितु 'सन्तान-धर्म' एवं 'पत्नी-रक्षा-धर्म' है। 'वाजीकरण' – आयुर्वेद की 'वाजीकरण-विद्या' – शारीरिक-बल एवं प्रजनन-क्षमता हेतु। यह 'ऋतुचर्या' (Seasonal regimen) का अंग है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'फैमिली-प्लानिंग' एवं 'वैवाहिक-स्वास्थ्य' – प्रतिदिन नहीं, अपितु 'अनुक्रमात्' (योजनाबद्ध) सम्बन्ध, एवं 'वाजीकरण' (आधुनिक सप्लीमेंट्स, फिटनेस) को 'प्रजनन-स्वास्थ्य' (Reproductive health) के रूप में अनुशंसित किया जाता है – 'धर्म' (पारिवारिक-स्थिरता) हेतु।

श्लोक ५७ (दिन-अन्त्य निद्रा-विधान)

श्लोक

विचार्य कार्यावयवान् दिनक्षये
विसृज्य लोकं प्रमदाकृतक्रियः ।
अशस्त्रबन्धेन हि साधु पाणिना
स्वपेद् असक्तं परमाप्तरक्षितः ॥५७॥

IAST

Vicārya kāryāvayavān dinakṣaye
visṛjya lokaṃ pramadākṛtakriyaḥ |
Aśastrabandhena hi sādhu pāṇinā
svaped asaktaṃ paramāptarakṣitaḥ ||57||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
विचार्य	विचार करके
कार्यावयवान्	कार्यों के अंग/भागों को
दिनक्षये	दिन के अन्त में
विसृज्य	विसर्जित करके
लोकम्	लोक/आम-जन/सेवक-वर्ग
प्रमदाकृतक्रियः	रानी के साथ कर्तव्य-क्रिया करके
अशस्त्रबन्धेन	शस्त्र-बन्धन/आयुध-भार से रहित
साधु	उचित/सुखद
पाणिना	हाथ से (शस्त्र/विष-वस्तु न लिए)
स्वपेत्	सोए
असक्तम्	आसक्ति-रहित

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
परमाप्तरक्षितः	परम-विश्वस्त अंगरक्षकों द्वारा रक्षित

भावार्थ
राजा रात्रि-समय सम्पूर्ण कार्यों का विचार करके, लोक/सेवकों को विदा करके, रानी के साथ यथोचित-क्रिया करके, तथा अपने हाथ में कोई शस्त्र-भार रखे बिना, परम-विश्वस्त रक्षकों से घिरा हुआ, आसक्ति-रहित होकर सुखपूर्वक निद्रा करे। निद्रा में भी सुरक्षा-प्रोटोकॉल एवं मानसिक-शान्ति आवश्यक है।

दार्शनिक विवेचन

'अशस्त्रबन्धेन पाणिना' – स्वप्न-अवस्था में शस्त्र-संभाल (Accidental harm) न हो, अतः निःशस्त्र-हाथ से सोना – यह 'अहिंसा' एवं 'सुरक्षा' दोनों है। 'असक्तम्' – विषय-सुख (रानी) में आसक्त न होना – यह योग-दर्शन का 'वैराग्य' (असक्ति) सिद्धान्त है, जो शान्त-निद्रा हेतु आवश्यक है।

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'VIP बेडरूम-प्रोटोकॉल' – रात्रि में अंगरक्षक कमरे के बाहर तैनात, सोने से पहले 'बेड-स्वीप' (शस्त्र/विष-जाँच), एवं 'नो-वेपन-इन-बेड' नियम – यह सब श्लोक-वर्णित व्यवस्था का ही समकालीन-रूप है।

श्लोक ५८ (राज-जागृति एवं प्रजा-सुख – अन्तिम-न्याय)

श्लोक

नयेन जाग्रत्य् अनिशं नरेश्वरे
सुखं स्वपन्तीह निराधयः प्रजाः ।
प्रमत्तचित्ते स्वपति त्रसद्भयात्
प्रजागरेणास्य जगत् प्रबाध्यते ॥५८॥

IAST

Nayena jāgraty aniśaṃ nareśvare
sukhaṃ svapantīha nirādhayaḥ prajāḥ |
Pramattacitte svapati trasadbhayāt
prajāgareṇāsya jagat prabādhyate ||58||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
नयेन	नीति/विवेक से
जाग्रति	जागते/सतर्क रहते हैं

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
अनिशम्	सदा/अनवरत
नरेश्वरे	राजा (जब)
सुखम्	सुख से
स्वपन्ति	सोते हैं
निराधयः	निराधि (बिना कष्ट/भय के)
प्रजाः	प्रजा
प्रमत्तचित्ते	प्रमत्त/असावधान चित्त वाले राजा में
स्वपति	(जब राजा) सोता है
त्रसद्भयात्	भय से काँपते हुए
प्रजागरेण	(राजा की) जागृति/सतर्कता से
अस्य	इस (राजा) का
जगत्	संसार/राज्य
प्रबाध्यते	सुरक्षित/नियंत्रित होता है

भावार्थ
जब राजा नीति-सहित सदा सतर्क रहता है, तो प्रजा सुख से एवं निराधि (बिना कष्ट) होकर सोती है। परन्तु जब राजा प्रमत्त-चित्त (असावधान) होकर सो जाता है, तो प्रजा भय से काँपती है। इस (राजा) की जागृति (प्रजागरेण) ही इस संसार (राज्य) को सुरक्षित/नियंत्रित करती है – **राजा की जागृति ही प्रजा की निद्रा है।** यही सम्पूर्ण आत्मरक्षा-प्रकरण का **सर्वोच्च दार्शनिक-निष्कर्ष है।**

दार्शनिक विवेचन

'नयेन जाग्रति' – यह 'अप्रमाद-योग' (सावधानी-योग) है – राजा की चेतना एवं सतर्कता ही लोक-व्यवस्था का आधार है। 'प्रमत्तचित्ते स्वपति' – यह 'तमस्' (अज्ञान/आलस्य) का प्रतीक है – जब शासक 'तमस्' में डूबता है, तो संसार 'रजस्/तमस्'

(अराजकता/भय) में डूब जाता है। 'प्रजागरेणास्य जगत् प्रबाध्यते' – 'प्रबाध्यते' का अर्थ 'सुरक्षित' भी है और 'नियंत्रित' भी – यह 'राज-धर्म' का उच्चतम बिन्दु है – **राजा की विवेक-जागृति ही प्रजा की निर्भय-निद्रा है।**

आधुनिक संदर्भ

आधुनिक 'राष्ट्रीय-सुरक्षा' – यदि राष्ट्रप्रमुख/सरकार सतर्क है, तो नागरिक निडर होकर सोते हैं (जैसे आपातकालीन-सायरन/मिसाइल-रक्षा)। यदि नेता असावधान है, तो जनता भयग्रस्त होती है। **'प्रजागरेण' – सतर्क-नीति ही सुशासन (Good Governance) की कसौटी है** – यही इस प्रकरण का शाश्वत-संदेश है।

श्लोक ५९ (समापन – मुनि-वचन एवं पालन-कल्याता)

श्लोक

इति स्म पूर्वे मुनयो बभाषिरे
नृपस्य राज्यस्य च साधु रक्षणम् ।
तद् एतद् एवं परिपालयन् नयान्
नरेश्वरः पालनकल्यतां व्रजेत् ॥५९॥

IAST

Iti sma pūrve munayo babhāṣire
nṛpasya rājyasya ca sādhu rakṣaṇam |
Tad etad evaṃ paripālayan nayān
nareśvaraḥ pālanakalyatāṃ vrajet ||59||

शब्दार्थ

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
इति	इस प्रकार
पूर्वे	प्राचीन
मुनयः	मुनि/ऋषि
बभाषिरे	कहते थे
नृपस्य	राजा की
राज्यस्य	राज्य की
साधु	उत्तम/सम्यक्

संस्कृत पद	हिन्दी अर्थ
रक्षणम्	रक्षा/सुरक्षा
तत्	वह (उक्त-नीति)
एतत्	यह (सब)
एवम्	इस प्रकार
परिपालयन्	पालन करता हुआ
नयान्	नीतियों/सिद्धान्तों का
नरेश्वरः	राजा
पालनकल्यताम्	पालन (शासन) की कल्याणमयता
व्रजेत्	प्राप्त होता है

भावार्थ
प्राचीन मुनियों ने राजा एवं राज्य की उत्तम-रक्षा का यह उपदेश दिया है। जो राजा इन नीतियों (नयान्) का इस प्रकार पालन करता है, वह 'पालनकल्यताम्' (शासन-कल्याण/समृद्ध-प्रजा-पालन) को प्राप्त होता है। **यही सम्पूर्ण सप्तम-सर्ग का अन्तिम एवं सारगर्भित निष्कर्ष है।**

दार्शनिक विवेचन

'पूर्वे मुनयः' – यह 'परम्परा' (Tradition) एवं 'ऋषि-वचन' (अपौरुषेय-ज्ञान) को मान्यता देता है। 'पालनकल्यताम्' – 'कल्याण' (Moksha/Prosperity) का राजनीति-प्रयोग – राजा का परम-लक्ष्य 'प्रजा-कल्याण' है। यह 'कामन्दकि' की 'लोक-संग्रह-नीति' का परम-सिद्धान्त है – **राजा का धर्म, प्रजा-कल्याण के लिए स्व-रक्षा से आरम्भ करना है।**

आधुनिक संदर्भ
आधुनिक 'गुड-गवर्नेंस' – यदि कोई नेता इन 'सुरक्षा-नीतियों' (शारीरिक, पारिवारिक, मानसिक-सुरक्षा) का पालन करता है, तो वह 'शासन-कल्याण' (Development & Welfare) को प्राप्त करता है। यही आज के 'राष्ट्रीय-सुरक्षा-सिद्धान्त' (National Security Doctrine) का प्राचीनतम एवं पूर्णतम-स्रोत है – **स्वयं सुरक्षित नेता ही सुरक्षित-राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।**

4. निष्कर्ष

सप्तम सर्ग (राजपुत्ररक्षण एवं आत्मरक्षण) कामन्दकीयनीतिसार के **सर्वाधिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं आधुनिक-प्रासंगिक** सर्गों में से एक है। इसके प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. **अनुशासन-रहित उत्तराधिकारी राज्य का विनाश है** – राजकुमारों को विनय (अनुशासन) एवं संस्कार देना राजा का प्रथम कर्तव्य है। दुष्ट पुत्र को पूर्णतः त्यागना नहीं, अपितु 'सुखबन्धन' (नियंत्रण) में रखना चाहिए।
2. **आत्मरक्षा ही प्रजा-रक्षा का आधार है** – राजा को वाहन, शय्या, भोजन, पेय, वस्त्र, आभूषण – हर चीज़ में सतर्क रहना चाहिए। विष-प्रयोग को रोकने हेतु पक्षी-परीक्षा, अग्नि-परीक्षा एवं द्रव-रंग-परीक्षा का वैज्ञानिक-प्रोटोकॉल दिया गया है।
3. **अन्तःपुर-सुरक्षा एवं स्त्री-संग-विवेक** – राजा को अन्तःपुर में भी सुरक्षा-प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए, तथा स्त्रियों (रानियों/सेविकाओं) पर कभी अति-विश्वास नहीं करना चाहिए – क्योंकि इतिहास-साक्षी है कि रानियों एवं निकट-सम्बन्धियों ने ही अनेक राजाओं का वध किया है।
4. **राज-जागृति ही प्रजा-सुख का मूल है** – इस सर्ग का अन्तिम एवं सर्वोच्च सिद्धान्त यह है कि **राजा की निरन्तर-सतर्कता (अप्रमाद) ही प्रजा की निर्भयता एवं सुख-निद्रा का कारण है**। प्रमत्त (असावधान) राजा सम्पूर्ण राज्य को भय एवं क्लेश में डुबो देता है।
5. **कामन्दक का यह सर्ग आधुनिक 'राष्ट्रीय-सुरक्षा-सिद्धान्त' (National Security Doctrine) का प्राचीनतम एवं पूर्णतम स्रोत है** – इसमें **शारीरिक-सुरक्षा, रासायनिक-सुरक्षा, पारिवारिक-सुरक्षा, स्थानिक-सुरक्षा, एवं मानसिक-सुरक्षा** – सभी आयाम समाहित हैं।

---

5. संदर्भ (References)

1. **मूल ग्रन्थ** – कामन्दकीयनीतिसार, सप्तमः सर्गः (राजपुत्ररक्षणप्रकरणम् एवं आत्मरक्षणप्रकरणम्) – श्लोक १-५९ (पूर्वोक्त विश्लेषण पर आधारित)।
2. **कौटिलीय अर्थशास्त्र** – आचार्य कौटिल्य (विष-परीक्षा-विधान, दुर्ग-रक्षा, मन्त्रि-नियोग)।
3. **मनुस्मृति** – राजा के कर्तव्य, दण्ड-नीति, कोश-रक्षा।
4. **महाभारत (शान्ति-पर्व)** – राजधर्म, आत्मरक्षा-नीति, राजपुत्र-शिक्षा।
5. **श्रीमद्भगवद्गीता** – कर्मयोग, अप्रमाद, जागृति, वीतराग।
6. **चरक संहिता / सुश्रुत संहिता** – विष-प्रकार, आयुर्वेदिक अगदतन्त्र।
7. **Kamandakiya Nitisara** – English translation by Manmatha Nath Dutt (1890). Archive.org.
8. **Indian Philosophy & Ethics** – *कामन्दकीय नीतिसार सप्तम सर्ग (राजपुत्ररक्षण एवं आत्मरक्षण)* – विस्तृत श्लोक-टीका एवं आधुनिक व्याख्या। उपलब्ध: https://indianphilosophyethics.blogspot.com/
